SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 24 • ISSUE 10 • DECEMBER 2025

हिन्दी मासिक दिसम्बर 2025

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

अक़ीद-ए-तौहीद की फ़िक्र कीजिए

अक़ीदा इसका नाम नहीं है कि सिर्फ़ ज़बान से " लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह " कह दिया बल्कि अक़ीदे का संबंध दिल व दिमाग़ से है । अक़ीदा जब दिल व दिमाग़ में आता है तो इंकलाब पैदा कर देता है,सोच व समझ बदल जाती है, आमाल बदल जाते हैं, बड़ी ताक़तें उसके सामने दम नहीं मार सकतीं,किसी की मजाल नहीं कि उसके सामने आकर खड़ा हो जाए ।

मौलाना सय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह.

एक प्रति ₹40/= वार्षिक ₹400/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
समयः (8:00 am to 1:00 pm)
Whats'app & Call:
Mob. 9559844716
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक) 60 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

दिसम्बर 2025 वर्ष 24 अंक 10

असहाबे रसूल सल्ल0

सहाब–ए–किराम रज़ि0 शरीअत के पीछे चलते थे, हम नारों के पीछे चलते हैं, उन्होंने सर झुकाया फिर कटाया, हम शरीअ़त के नाम पर सर कटाने की बात तो करते हैं, लेकिन शरीअ़त की ख़ातिर, सर झुकाने के लिए तैयार नहीं होते, हम हंगामा पसन्द, जुलूस पसन्द, जल्से पसन्द, प्रदर्शन पसन्द, नारेबाज़ी पसन्द, लेकिन सुकून के साथ क़ानूनी दाएरे में मसाएल को हल करने की कोशिश नहीं करते।

मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी रह0

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
इस्लाम क्या है?	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	13
सामूहिक कोशिश से पहले	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	16
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	18
अच्छे व्यवहार की शिक्षा	मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी	20
तीन कुव्वतों की ज़रूरत	मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी	22
हाथों की कमाई	डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	24
क्या ए0आई0 टेक्नालोजी बता सकेगी	इं0 जावेद इक़बाल	25
निकाहः एक पाकीज़ा रिश्ता	मौलाना मुहम्मद जैनुल हक़ नदवी	28
मूर्खता का समर्थन क्यों?	गुलज़ार सहराई	30
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	32
मालदार कौन?	मायल ख़ैराबादी	34
हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0	मुहम्मद इक़बाल नदवी	36
सोशल मीडिया का समाज पर	नौशाद खान	38
स्वास्थ्य	डॉ0 विभू पाण्डेय	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू अब्दुर्रहमान नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-नहलः-

अनुवादः—

फिर आप का पालनहार उन लोगों के लिए जिन्होंने नादानी में बुराई की फिर उसके बाद तौबा कर ली और अपना सुधार कर लिया निश्चित रूप से आपका पालनहार इसके बाद तो बहुत माफ करने वाला बड़ा ही दयालु है(119) बेशक इब्राहीम ऐसे पेशवा थे जिन्होंने हर ओर से एकाग्र हो कर अल्लाह की आज्ञापालन को अपना लिया था और वे शिर्क करने वालों में न थे[1](120) उसकी नेमतों के शुक्र अदा करने वाले थे अल्लाह ने उनको चुना और उनको सीधी राह पर चलाया(121) और हमने उनको दुनिया में भी भलाई दी और आखिरत में तो निश्चित रूप से वे अच्छे लोगों में हैं(122) फिर हमने आपको आदेश भेजा कि इब्राहीम की मिल्लत (तरीक़े) पर चलिए जो एकाग्र थे और मुश्रिकों में न थे(123) शनिवार का दिन उन्हीं लोगों के लिए निर्धारित हुआ था जो लड़ पड़े थे और निश्चित रूप से आपका पालनहार क़यामत के दिन उनके बीच उन चीज़ों का फैसला कर देगा जिनमें वे झगड़ते थे[2](124) अपने पालनहार के रास्ते की ओर हिकमत और अच्छे उपदेश के द्वारा बुलाते रहिए और अच्छी शैली में उनसे बहस कीजिए बेशक आपका पालनहार खूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटक गया और वह सही रास्ता चलने वालों को भी खूब जानता है(125) और अगर तुम्हें बदला लेना ही हो तो उतना ही लो जितनी तुम्हें तकलीफ़ पहुंची और अगर तुम सब्र कर लो तो यह सब्र करने वालों के लिए बेहतर है(126) और आप सब्र कीजिए और अल्लाह ही की मदद से आप सब्र कर सकेंगे और उन पर दुखी न होइये और जो वे चालें चलते हैं उससे संकोच में मत पड़िये(127) बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जो परहेजगार हैं और वे जो भलाई करने वाले हैं(128)।

सूर-ए-बनी इस्राईलः-

(यह मक्की सूरत है इसमें 12 रुकू और 111 आयतें हैं)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अनुवादः—

पवित्र है वह जो अपने बन्दे को रातों—रात मस्जिद—ए—हराम से मस्जिद—ए—अक्सा ले गया, जिसके आसपास हमने बरकत रखी है ताकि हम उनको अपनी निशानियाँ दिखा दें बेशक वह खूब सुनता खूब जानता है[3](1) और हमने मूसा को किताब दी और उसको बनी इस्राईल के लिए पथ प्रदर्शक बना दिया कि तुम मेरे अलावा और किसी को काम बनाने वाला मत ठहराना(2) कि तुम उनकी संतान हो जिनको हमने नूह के साथ सवार कर दिया था निश्चित रूप से वे बड़े शुक्र गुजार (कृतज्ञ) बंदे थे[4](3) और हमने नविश्ता (भाग्य) में तय करके बनी इस्राईल को आगाह कर दिया था कि तुम जरूर धरती में दो बार बिगाड़ करोगे और बड़ी सरकशी (उदण्डता) दिखाओगे(4) फिर जब उन दोनों में से पहला वादा आ

पहुँचा तो हमने तुम पर अपने ऐसे बन्दों को मुसल्लत किया जो बड़े योद्धा थे बस ये शहरों के बीच घुस गये और यह तो एक ऐसा वादा था जिसे पूरा होना ही था[5](5) फिर हमने तुम्हें दोबारा उन पर वर्चस्व दिया और धन व सन्तान से तुम्हारी सहायता की और तुम्हें बड़े (लाव–लश्कर) वाला बना दिया(6) अगर तुमने भला किया तो अपना ही भला किया और अगर तुमने बुराई की तो अपने ही लिए की फिर जब दूसरा वादा आ पहुँचा (तो फिर हमने दूसरे दुश्मनों को तुम पर मुसल्लत किया) ताकि वे तुम्हारा हुलिया बिगाड़ दें[6] और मस्जिद–ए–अक़्सा) में घुस जाएं। जैसे पहले घुसे थे और जिस पर नियंत्रण पाएं उसे नष्ट कर डालें(7)।

तफ़सीर (व्याख्या):–

1. अरब के मुश्रिकों से कहा जा रहा है कि तुम किस मुँह से उनके अनुसरण का दावा करते हो, वे आज्ञाकारी थे तुम अवज्ञाकारी, वे अल्लाह के लिए एकाग्र थे तुम दुनिया के पीछे लगे हो, वे एकेश्वरवादी थे तुम बहुदेववादी हो, वे कृतज्ञ तुम नाशक्रे, आखिर तुम्हें उनसे जोड़ ही क्या? ''उम्मत'' यानी अकेले ही एक महान सम्प्रदाय के बराबर सबके नेता और मार्गदर्शक।

2. यहूदियों को सनीचर के दिन काम काज से रोक दिया गया था यह विशेष आदेश उन्हीं के लिए था जो हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सम्प्रदाय में न था तो यहूदियों में कुछ लोगों ने माना और कुछ लोगों ने न माना और उस दिन मछली का शिकार करने लगे जिसके फलस्वरूप बन्दर और सुअर बना दिये गए, इसका विवरण, पहले गुजर चुका है. वास्तविक मिल्लत (तरीक़) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तरीका है, बीच में यहूदियों और ईसाइयों को विशेष आदेश दिये गये थे, फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से कहा जा रहा है कि उसी इब्राहीमी मिल्लत को जीवित किया जाए और शिर्क को जड़ से उखाड़ फेंका जाए। ◆◇◆

3. इस आयत में मेराज की घटना की ओर संकेत है, जब हज़रत जिब्रईल अलै0 हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रातों रात बुर्राक पर सवार कराके पहले मस्जिद–ए–हराम से मस्जिद–ए–अक्सा ले गए यह यात्रा का पहला चरण था इसको ''इस्रा'' कहा जाता है फिर मस्जिद–ए–अक़्सा से सातों आसमानों की सैर कराई, नबियों से मुलाकातें हुई, फिर जन्नत के एक विशेष पेड़ ''सिद्रतुल मुंतहा'' तक ले गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह से बातें करने का गौरव प्राप्त हुआ, पाँच नमाज़ों का उपहार उम्मत (मुस्लिम समुदाय) के लिए मिला और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस आए, यात्रा का यह दूसरा चरण मेराज कहलाता है, और कभी पूरी यात्रा को भी इस्रा या मेराज कह दिया जाता है, सही हदीसों से मालूम होता है और पवित्र कुरआन की शैली भी यही बताती है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह यात्रा शरीर और आत्मा दोनों के साथ थी, यह कोई सपना नहीं था, मस्जिद–ए–अक़्सा फिलिस्तीन में स्थित है जो शाम (सीरिया) देश का एक भाग था, अल्लाह ने इस पूरे देश को बाहरी व आंतरिक हर प्रकार की बरकतों से सम्मानित किया है, पूरा देश बहुत ही हरा भरा, पैदावार की बहुतायत और दूसरी ओर पैग़म्बर लोग भी यहीं रहते थे और यहीं उनकी क़ब्रें हैं।

शेष पृष्ठ ...15....पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

नेकी और भलाई के कामों में जल्दी और ठहराव का बयानः-

जटिल हालात में डटे रहने का तरीकाः—

हजरत अबू उमय्यः शअबानी रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने अबू सअलबः खुशनी रज़ि0 से पूछा कि इस आयत (अलैकुम अनफुसकुम) के बारे में क्या कहते हो? तो जवाब में उन्होंने कहा कि तुमने एक अच्छे जानकार से इसका मतलब मालूम किया। मैंने इसके बारे में अल्लाह के रसूल सल्ल0 से पूछा तो आप सल्ल0 ने फरमाया इसका मतलब यह है कि भलाई के मश्वरे करो और बुराई से बचो। और जब देखो कि लालच का दौर—दौरा है और लोग ख्वाहिशाते नफ़्स (कामनाओं) के गुलाम बन चुके हैं, दुनिया को अव्वलियत हासिल है, हर आदमी अपनी राय मश्वरे को सबसे बढ़कर अच्छा समझता है, तो तुम अपनी चिंता और फिक्र करो, आम लोगों से दूर रहो, इसलिए कि तुम्हें सख़्त और मुश्किल परिस्थितियों और हालात से पाला पड़ने वाला है, जिनमें दीन पर जमे रहना उतना ही कठिन और मुश्किल होगा जितना कि हाथ में अंगारा लेना, उस नाजुक जमाने में दीन पर चलने वाले और अमल करने वाले को इस ज़माने के जैसे पचास अमल करने वाले आदमियों का अज्र और बदला मिलेगा।

(अबू दाऊद, तिर्मिजी, इब्नि माजा)

इबादत व ताअत में ऐतदालः-

हक वालों का हक अदा करनाः—

हज़रत अबू जुहैफा (वहब बिन अब्दुल्लाह रज़ि0) फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल स्ल्ल0 ने एक दिन हज़रत सलमान और हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 के बीच मुआखात (बन्धुत्व और भाई—चारगी) करा दी, एक दिन हज़रत सलमान रज़ि0 हज़रत अबू दर्दा के घर आए, उनकी बीबी को देखा कि बहुत मामूली (मोटे—झोटे) कपड़ों में थीं, कहाः तुम्हारा क्या हाल है? जवाब दियाः तुम्हारे भाई को दुनिया में (किसी चीज़ की) ज़रूरत नहीं, इतने में हज़रत अबू दर्दा आ गये, उनके लिए खाना तैयार किया गया, हज़रत अबू दर्दा ने हज़रत सलमान से कहाः मैं रोजे से हूँ, तुम खाओ, हजरत सलमान ने कहाः जब तक तुम नहीं खाओगे मैं नहीं खाऊँगा, तो उन्होंने खाया, जब रात हुई तो हजरत अबू दर्दा (नमाज़ के लिए) खड़े हुए, हज़रत सलमान ने कहाः— सो जाओ, वह सो गए, फिर खड़े हुए, फिर कहा— अभी सोओ, जब आखिरी पहर हुई तो हज़रत सलमान ने कहा अब उठो, फिर दोनों ने नमाज़ पढ़ी। हज़रत सलमान ने उनसे कहा! तुम्हारे रब का तुम पर हक़ है, तुम्हारी जान का तुम पर हक है, तुम्हारी बीवी का तुम पर हक है, हर एक का हक़ उसके मुताबिक अदा करो, वे नबी (सल्ल0) के पास आए और इसका जिक्र किया, आप सल्ल0 ने फरमाया सलमान ने सच कहा। (बुखारी)

लगातार रोजे रखने की मनाहीः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल—आस रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 को खबर दी गई कि मैं कहता हूँ कि जब तक जिंदा रहूँगा दिन को रोज़ा रखूँगा, और रात को इबादत करूँगा।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— तुम ही ने यह कहा है? मैंने कहा मेरे माँ—बाप आप पर कुर्बान, ऐ अल्लाह के नबी! यह बात मैंने ही कही है। आप सल्ल0 ने फरमायाः तुम ऐसा नहीं कर सकते। रोज़े भी रखो, खाओ—पियो भी, सोओ भी और नफ्लें भी पढ़ो, महीने में तीन दिन रोजे इस लिये रखो कि एक नेकी पर दस गुना सवाब मिलता है, यह हमेशा रोजे रखने के बराबर हो जाएगा, मैंने कहा ऐ अल्लाह के नबी! मैं इससे ज़्यादा की ताकत रखता हूँ। आप सल्ल0 ने फरमायाः अच्छा, एक दिन रोज़ा रखो और एक दिन छोड़ दो। हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम इसी तरह रोजा रखते थे, इससे बेहतर रोजा नहीं हो सकता। वे कहते हैं ''अगर मैंने महीने में तीन रोजे रखने वाली हुजूर सल्ल0 की बात मान ली होती तो यह मेरे लिए मेरे बाल—बच्चों और धन—दौलत से भी बेहतर होती।

(बुखारी व मस्लिम)

पाबन्दी और माध्यमिकता इस्लाम की दो पसन्दीदा चीजें:—

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 से सम्बन्धित इबादत के बारे में पूछने के लिए तीन आदमी नबी सल्ल0 की पवित्र बीवियों के घर आए, जब आपकी बीवियों ने आप सल्ल0 की इबादत के बारे में बताया तो मानो उन लोगों ने उसको कम समझा और कहाः— कहाँ हम लोग और कहाँ अल्लाह के रसूल सल्ल0? आप सल्ल0 के तो अगले, पिछले तमाम गुनाह मॉफ कर दिये गए हैं। उनमें से एक ने कहाः मैं हमेशा रात भर नमाजें पढ़ा करूँगा, दूसरे ने कहा, मैं हमेशा रोजे रखूँगा, तीसरे ने कहाः मैं औरतों से अलग रहूँगा, कभी शादी नहीं करूँगा, इतने में अल्लाह के रसूल (सल्ल0) तशरीफ लाए, आप (सल्ल0) ने फरमायाः तुम ही लोग ये सब बातें कह रहे थे? सुनो! मैं तुम सब से बढ़कर अल्लाह से डरने वाला हूँ, तुम में सब से ज़्यादा अल्लाह की खुशी का ख़्याल रखने वाला हूँ, लेकिन मैं कभी रोजः रखता हूँ और कभी नहीं रखता हूँ, नमाज भी पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ, जो हमारे तरीके से मुँह मोड़े वह हम में से नहीं है।

(बुखारी व मुस्लिम)

शरीर को अनुचित कष्ट देने पर रोकः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 खुतबा (व्याख्यान) दे रहे थे, इसी बीच आप सल्ल0 की नज़र एक आदमी पर पड़ी जो खड़ा था, आप सल्ल0 ने फरमाया— यह कौन है? लोगों ने बताया कि यह अबू इस्राईल हैं, इन्होंने मन्नत (प्रण) मानी है कि धूप में खड़े रहेंगे, न बैठेंगे, न छाया में रहेंगे, और न किसी से बात करेंगे, और हमेशा रोजे से रहेंगे, अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— इनसे कहो कि बात करें, छाया में रहें, बैठें और अपना रोजः पूरा कर लें।

(बुखारी)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 घर में दाखिल हुए तो आप सल्ल0 ने देखा कि दो खम्बों के बीच एक रस्सी बंधी हुई है। आप सल्ल0 ने पूछा यह कैसी रस्सी है? बताया गया कि जैनब की रस्सी है। जब (इबादत में) सुस्ती महसूस करती हैं तो इससे लटक जाती हैं, आप सल्ल0 ने फरमाया इसको खोल दो, कि जब चुस्ती हो तो नमाज़ पढ़ो और सुस्ती मालूम हो तो सो जाओ।

(बुखारी व मुस्लिम)

❖❖❖

इस्लाम क्या है?

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

इस्लाम वह दीन और धर्म है जिसको संसार के स्वामी और सृष्टा अल्लाह ने मानव जाति के लिए पसन्द फरमाया, जिसकी सूचना उसने स्वयं दी—

अनुवादः— ''आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत (सुख—सामग्री) पूरी कर दी और दीन के रूप में तुम्हारे लिए इस्लाम को पसन्द कर लिया''।

(अल—माइदाः 3)

यह आयत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अन्तिम हज ''हज्जतुल वदा'' के अवसर पर उतरी, जब एक लाख से ऊपर सहाबा आपके साथ थे। इस्लाम वही दीन है जिसकी दअ़वत और तालीम हर नबी ने अपने ज़माने में दी, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 तक जिनकी संख्या एक लाख चौबीस हज़ार है सबने केवल इस्लाम की दअ़वत दी, और एक ही अल्लाह की इबादत की ओर सबको बुलाया, जिस दीन की दअ़वत अल्लाह के समस्त नबियों ने दी हो उस दीन के सत्य होने में क्या सन्देह हो सकता है।

इस्लाम वह दीन है जिसको अपनाने और स्वीकार करने के बाद इन्सान को लोक और प्रलोक की सफलता मिलती है। उपरोक्त व्याख्या के बाद यह बात स्पष्ट हो गई कि संसार के स्वामी और सृष्टा अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए इस्लाम को पसन्द कर लिया इस्लाम ने अक़ीदे की शुद्धता पर बहुत ज़ोर दिया है इस पर किसी प्रकार का समझौता नहीं करता है, इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ाएद हैं, अक़ीद—ए—तौहीद, अक़ीद—ए—रिसालत, अक़ीद—ए—आख़िरत, हज़रत आदम अलै0 से लेकर ख़ातमुन्नबीईन मुहम्मद सल्ल0 तक तमाम अम्बियाए किराम एक निश्चित अक़ीदे की (जो उनको ''वही'' द्वारा मिला था) दअ़वत देते और उसका मुतालबा करते रहे, किसी क़ीमत पर उसको छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुए, इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा ''तौहीद'' है, संक्षेप में उसका अर्थ अल्लाह को एक जानना और मानना, वह अकेला है उसका कोई साझीदार नहीं, पूरा कुरआन अक़ीद—ए—तौहीद से भरा हुआ है, यहां पर उदाहरण के तौर पर कुरआन शरीफ़ की छोटी सूरः इख़लास का अनुवाद प्रस्तुत है जिसमें अल्लाह का संक्षिप्त परिचय है और बहुत व्यापी है। यह केवल चार आयतें हैं ''कह दीजिए कि वह अल्लाह एक है, वह अल्लाह जो किसी का मोहताज नहीं और सब उसके मोहताज हैं, न वह किसी का बाप है, न किसी का बेटा, और कोई भी उसके जोड़ का नहीं''।

इस अति संक्षिप्त सूरः में अल्लाह की तौहीद को बहुत ही व्यापक शैली में बयान किया गया है, पहली आयत में उन लोगों का खण्डन है जो एक से अधिक खुदाओं के पक्षधर हैं, दूसरी आयत में उन लोगों का खण्डन है जो एक खुदा के मानने के बावजूद किसी और को भी संकट मोचन (मुश्किल कुशा) या ज़रूरतों का पूरा करने वाला समझते हैं, तीसरी आयत में उन लोगों का खण्डन है जो खुदा के लिए बेटा मानते हैं और चौथी आयत में उन लोगों का खण्डन है जो किसी भी स्तर पर किसी को खुदा के बराबर ठहराते हैं।

अक़ीद—ए—तौहीद के बाद इस्लाम का दूसरा बुनियादी अक़ीदा ''अक़ीद—ए—नबूवत'' है, अल्लाह ने इन्सान की रहबरी और रहनुमाई के लिए नबियों को भेजा, नबी अगरचि मानव जाति ही से संबंधित होते थे,

परन्तु वह उच्च कोटि के इन्सान थे, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक सब पर ईमान लाना अनिवार्य है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नबूवत समाप्त हो गई, अल्लाह ने अपनी किताब क़ुरआन मजीद की सूरः अहज़ाब में आप सल्ल0 को ''ख़ातमुन्नबियीन'' कह कर यह अक़ीदा भी साफ़ बयान कर दिया कि आप सल्ल0 के आगमन से नबियों के क्रम पर मोहर लग गई, आप सल्ल0 की नबूवत क़यामत तक है, अब कोई नया नबी आने वाला नहीं है।

अब रहती दुनिया तक सारे इन्सानों के रसूल और नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 हैं अल्लाह का फरमान है '' आप सल्ल0 कह दीजिए कि ऐ लोगो! मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का रसूल बना कर भेजा गया हूं जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है उसके अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही ज़िन्दगी देता है वही मौत देता है, बस ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर।

(सूरः आराफ़: 158)

नबी करीम सल्ल0 से पहले जो नबी आते थे वह निश्चित समय के लिए निश्चित क़ौम और मुल्क के लिए विशेष होते थे, परन्तु जब अन्तिम नबी सल्ल0 का आगमन हुआ तो अल्लाह तआला ने आप सल्ल0 को संबोधित करते हुए फ़रमाया ''और हमने आपको सारे संसारों के लिए दया (रहमत) बना कर भेजा है। (सूरः अम्बिया:107)

पूरी दुनिया विनाश के रास्ते पर पड़ गई थी, आप सल्ल0 ने उसकी मुक्ति का प्रबन्ध किया और इन्सानों को इन्सानियत का पाठ पढ़ाया, महिलाओं को उनका स्थान बताया, दोस्त दुश्मन सब आप की करूणा सागर से लाभांवित हुए यहाँ तक कि पशु व पक्षी भी इससे वंचित न रहे और आपके द्वारा दिये गये आदेशों का सबको लाभ पहुँचा।

एक अच्छी और सफल ज़िनदगी प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है कि पूर्ण रूप से मुहम्मद सल्ल0 का अनुसरण किया जाए, यही अल्लाह का आदेश है। ''निश्चित रूप से तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल सल्ल0 में बेहतरीन आदर्श मौजूद है।

(सूरः अहज़ाबः 21)

जो लोग आख़िरत के सवाब की उम्मीद रखते हैं और अल्लाह को खूब याद करते हैं उनके लिए आप सल्ल0 का व्यक्तित्व बेहतरीन आदर्श और नमूना है, हर कथनी व करनी में उठने बैठने में साहस व अडिगता में और हर मामले में चाहिए कि उन्हीं का अनुसरण, हर हाल में किया जाए। जो व्यक्ति मुहम्मद सल्ल0 का आज्ञापालन करेगा, उसने अल्लाह का आज्ञापालन किया जो अल्लाह की मुहब्बत का हक़दार बनना चाहता है उसके लिए अनिवार्य है कि वह मुहम्मद सल्ल0 की इत्तिबा और पैरवी करे। अल्लाह तआला फ़रमाता है ''आप सल्ल0 कह दीजिए अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी राह चलो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करने लगेगा, और तुम्हारे गुनाहों को मॉफ़ कर देगा और अल्लाह बहुत मॉफ करने वाला अत्यन्त दयालू है''।

(सूरः आले इमरान:31)

नबी का सम्मान करना और उससे मुहब्बत ईमान का भाग है, पवित्र कुरआन नबियों के लिए उस सम्मान और प्रतिष्ठा की मांग करता है जो दिल की गहराईयों में पैदा हो और उनसे भावनात्मक लगाव तथा मुहब्बत पैदा करना चाहता है। और केवल उनकी उस इताअत (आज्ञापालन) पर राज़ी नहीं जो भावना, मुहब्बत और आदर से खाली हो, जैसे कि प्रजा का बादशाह के साथ और दूसरे फ़ौजी व सियासी लीडरों के साथ जनता का एक औपचारिक संबंध होता है। कुरआन मोमिन से ज़कात व सदक़ात के फ़राएज़ की केवल

अदाएगी और आदेशों के पालन को काफ़ी नहीं समझता बल्कि उसका मुतालबा यह भी है।

अनुवादः– ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसका आदर करो और सुबह शाम अल्लाह की पाकी बयान करो''।

(सूरः अल फ़तहः 9)

इसीलिए कुरआन ने हर उस चीज़ का हुक्म दिया जिससे नबी की इज़्ज़त व सम्मान की रक्षा होती हो और हर उस चीज़ से मना किया जिससे नबी की अनादरता होती हो और जिससे उनकी इज़्ज़त पर आँच आती हो, उनकी शान घटती हो और उनकी बड़ाई कम होती हो।

ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ों को पैग़म्बर की आवाज़ से ऊँची मत किया करो और जिस तरह तुम एक दूसरे को ज़ोर–ज़ोर से पुकारते हो उस तरह पैग़म्बर को ज़ोर से मत पुकारा करो कि कहीं तुम्हारे सब काम बेकार न चले जाएं और तुम्हें एहसास भी न हो, बेशक जो लोग अपनी आवाज़ों को अल्लाह के पैग़म्बर के सामने नीचा रखते हैं यही वह लोग हैं जिन के दिल अल्लाह ने तक़वे के लिए परख लिए हैं उनके लिए मग़फ़िरत है और बड़ा बदला है।

(सूरः अल हुजरातः 2–3)

नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया तुममें से कोई मोमिन नहीं हो सकता, जब तक कि मैं उसके लिए उसके बाप उसके लड़के और तमाम लोगों की तुलना में अधिक प्रिय न हो जाऊँ।

दुरूद हो प्यारे नबी पर।
सलाम हो प्यारे नबी पर।।

इस्लाम का तीसरा बुन्यादी अक़ीदा ''आख़िरत'' है अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात (गुण) के ज्ञान के बाद दूसरा बड़ा ज्ञान जो नबी दुनिया को प्रदान करते हैं और जो उनके बिना किसी अन्य स्रोत से कदापि नहीं मिल सकता, वह यह ज्ञान है कि इन्सान मर कर दोबारा ज़िन्दा होगा और यह संसार टूट–फूट कर दोबारा बनेगा, उस दूसरी ज़िन्दगी में इन्सान को अपनी पहली ज़िन्दगी का हिसाब व किताब देना होगा, उसने दुनिया की ज़िन्दगी में जो कुछ किया वह उसके सामने आएगा।

इन्सान के पास इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए नबियों के अलावा कोई साधन नहीं। इतनी बात तो सब जानते और मानते हैं कि जो इस दुनिया में पैदा हुआ उसको किसी न किसी दिन मरना आवश्यक है। लेकिन अपने तौर से यह किसी को नहीं मालूम और न कोई इसको मालूम कर सकता है कि मरने के बाद क्या होता है और क्या होगा? यह बात केवल अल्लाह को ही मालूम है और उसके बतलाने से नबियों और रसूलों को मालूम होती है और उनके बतलाने से हम जैसे आम साधारण आदमियों को भी मालूम हो जाती है। अल्लाह के हर नबी ने अपने अपने समय में अपनी क़ौम और अपनी उम्मत को भलीभांति बतलाया और चेतावनी दी थी कि मरने के बाद किन किन मन्ज़िलों से तुमको गुज़रना होगा और दुनिया में किये हुए तुम्हारे आमाल की जज़ा व सज़ा हर मन्ज़िल में तुम्हें किस तरह मिलेगी और अल्लाह के अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 जिनके बाद क़यामत तक कोई नबी आने वाला नहीं है इसलिए उन्होंने मरने के बाद की मन्ज़िलों का बयान विस्तार के साथ व्याख्या की है, अगर उस सबको जमा किया जाए तो एक बहुत बड़ा दफ़्तर तैयार हो सकता है। कुरआन शरीफ़ में और हुज़ूर सल्ल0 की हदीसों में जो कुछ इस विषय में फ़रमाया गया है उसका सारांश संक्षेप में यह है कि मरने के बाद तीन मंज़िलें आने वाली हैं– पहली मंज़िल मरने के समय से लेकर क़यामत तक की है उसको आलमे बरज़ख़ कहते हैं। मरने के बाद आदमी का शरीर चाहे ज़मीन में दफ़न कर दिया जाए, चाहे

दरया में बहा दिया जाए, चाहे जला कर राख कर दिया जाए, लेकिन उसकी रूह किसी सूरत में भी फ़ना नहीं होती, केवल इतना होता है कि वह हमारी इस दुनिया से मुनतक़िल हो कर दूसरी दुनिया में चली जाती है, वहां अल्लाह के फ़रिश्ते उसके दीन व मज़हब से संबंधित उससे कुछ सवालात करते हैं वह अगर सच्चा ईमान वाला है तो ठीक ठीक जवाब दे देता है, जिस पर फ़रिश्ते उस को ख़ुशख़बरी सुना देते हैं कि तू क़यामत तक चैन व आराम से रह और अगर वह मोमिन नहीं होता है, तो उसी समय से सख़्त अज़ाब और दुख में पीड़ित कर दिया जाता है। जिसका सिलसिला क़यामत तक जारी रहता है, यही बरज़ख़ की मंज़िल है जिसका ज़माना मरने के समय से लेकर क़यामत तक का है।

इसके बाद दूसरी मंज़िल क़यामत और हश्र की है, क़यामत का मतलब यह कि एक समय ऐसा आएगा कि अल्लाह के हुक्म से यह सारी दुनिया एकदम फ़ना कर दी जाएगी (यानी जिस तरह सख़्त क़िस्म के ज़लज़लों से इलाक़े के इलाक़े ख़त्म हो जातें हैं, उसी तरह से उस समय सारी दुनिया दरहम बरहम हो जाएगी) और सब चीज़ों पर एक दम फ़ना आ जाएगी। बहुत दिनों के बाद अल्लाह तआला जब चाहेगा सब इन्सानों को फिर से ज़िन्दा कर देगा, उस समय सारी दुनिया के अगले पिछले सब इंसान दोबारा ज़िन्दा हो जाएंगे और उनकी दुनियावी ज़िन्दगियों का पूरा हिसाब होगा। इस जांच और हिसाब में अल्लाह के जो बन्दे नजात और जन्नत के योग्य होंगे उनके लिए जन्नत का हुक्म दे दिया जाएगा और जो अत्याचारी और अपराधी अल्लाह के अज़ाब और दोज़ख़ के हक़दार होंगे उनके लिए दोज़ख़ का हुक्म सुना दिया जाएगा। यह मनज़िल मरने के बाद की दूसरी मंज़िल है जिसका नाम क़यामत और हश्र है। इसके बाद जन्नती हमेशा हमेश सदैव के लिए जन्नत में जाएंगे जहां केवल आराम और चैन होगा और लज़्ज़त और राहत होगी जो इस दुनिया में किसी ने न देखी होगी और न सुनी होगी और दोज़ख़ी दोज़ख़ में डाल दिए जाएंगे जहां उनको बड़े बड़े सख़्त क़िस्म के अज़ाब और दुख होंगे अल्लाह हम सबको अपनी पनाह में रखे। यह दोज़ख़ और जन्नत ही मरने के बाद की तीसरी और आखिरी मंज़िल है और फिर लोग हमेशा हमेश अपने आमाल के अनुसार जन्नत या दोज़ख़ में रहेंगे।

मरने के बाद के संबंध में अल्लाह के नबियों ने और विशेष तौर पर अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने जो कुछ बताया है और क़ुरआन व हदीस में फ़रमाया गया है उसका सारांश वही है जिसका वर्णन ऊपर किया गया है, इसके बाद कुछ आयतें और हदीसें भी सुन लीजिएः—

1. अनुवादः— हर जान को मौत का मज़ा चखना है, फिर तुम सब हमारी तरफ लौटोगे।

(सूरः अनकबूतः 57)

2. हर जान को मौत का मज़ा चखना है, और तुम्हारे आमाल के बदले क़यामत के दिन पूरे पूरे दिए जाएंगे।

(सूरः आले इमरानः 185)

क़यामत और उसकी हवलनाकियों का ज़िक्र क़ुरआन शरीफ़ में सैकड़ों जगह किया गया है, उदाहरण के तौर पर सूरः हज का पहला रुकू देखये, इसी प्रकार सूरः मुजम्मिल की आयतें पढ़ए, तीसवें पारे में सूरः अबसा की तिलावत कीजिए क़ुरआन की इन सूरतों और आयतों में क़यामत का पूरा मंज़र आँखों के सामने आ जाता है। क़ुरआन व हदीस में क़यामत और जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र इतने विस्तार से सैकड़ों बार इसलिए किया गया है कि हम दोज़ख़ के अज़ाब से बचने की और जन्नत हासिल करने की कोशिश से ग़ाफ़िल न हों।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

ग़ीबतः-

ग़ीबत कहते हैं पीठ पीछे किसी की बुराई बयान करना, हदीस में इसका विवरण और तफ़सीर मौजूद है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार सहबा किराम को खिताब करते हुए फरमायाः—

अनुवादः—"तुम जानते हो कि गीबत क्या है? सहाबा ने अर्ज किया अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः अपने भाई का ऐसा जिक्र जो उसे ना पसंद हो, पूछ गया कि अगर मेरे भाई में वो (ना पसंदीदा) चीज मौजूद हो जो मैं कह रहा हूँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अगर उस के अन्दर वो चीज़ मौजूद है तब ही तो तुम ने ग़ीबत की और अगर वो चीज़ मौजूद ही नहीं है, तो तुमने उस पर तोहमत लगाई (जो ग़ीबत से बड़ा गुनाह है)।

(मुस्लिम शरीफ 6758)

आमतौर पर लोग इस गलतफहमी का शिकार रहते हैं कि अगर किसी ऐसी बुराई को बयान किया जाए जो मौजूद है तो ये ग़ीबत नहीं है, इस हदीस में बात साफ कर दी गई कि ग़ीबत तो जब ही है कि बुराई मौजूद हो, और अगर बुराई मौजूद नहीं है तब ये आरोप लगाना है जो बहुत बड़े गुनाहों में से है।

आमतौर पर खराब मिज़ाज के नतीजे में आदमी गीबत में लिप्त होता है, कुछ लोग तो सिर्फ नातीजे पर नज़र न रखने की वजह से ये काम करते हैं, उनको ये खयाल ही नहीं रहता कि दुनिया व आखिरत में इसके नुकसान क्या हैं, एक बड़ी तादाद घमण्डी लोगों की भी होती है जो किसी को उठता हुआ नहीं देख सकते, उनके सामने अगर किसी की तारीफ की जाने लगे तो फौरन बुराईयाँ तलाश करके बयान करने लगते हैं, जबकि इस्लामी मिज़ाज ये चाहता है कि अगर दस बुराईयों में एक नेकी भी है तो नेकी की चर्चा की जाए और बुराई का जिक्र न हो, फिर भी ये खयाल रहे कि अगर कहीं गवाही देने का मसला है या कोई किसी के बारे में मशवरा कर रहा है तो अपनी जानकारी के मुताबिक सही राय का इजहार कर दिया जाए, एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निकाह के लिए दो लोगों के बारे में पूछा गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूरा साफ साफ बता दिया, और जो कमी थी वो भी बयान कर दिया ताकि आदमी धोखे में न पड़े और बाद में उसको पछतावा उठाना पड़े, मुहद्दिस हज़रात के यहाँ "जरह व तादील" का मुस्तक़िल फन इसीलिए वजूद में आया कि गलत लोगों से रिवायत नक़ल करने में एहतियात बरती जाए और बे बुनियाद रिवायत समाज में फैल न जाए, ये एक दीनी, शरई मसलहत और ज़रूरत थी और अब भी अगर ज़रूरत पड़े तो बिल्कुल दो टूक अंदाज में बात साफ कर दी जाए ताकि न लोग धोखे में पड़ें और न ही उम्मत किसी धोखे का शिकार हो, लेकिन ये बात खास तौर पर ध्यान देने के लायक है कि इसमें सीमायें बाकी रखी जाएं, अक्सर ऐसा होता है कि इसमें स्वार्थ शामिल हो जाता है और इस पर ज़रुरत का पर्दा डाल दिया जाता है।

मौजूदा दौर में ये बीमारी अच्छे अच्छे दीनदार क्षेत्रों में पैदा हो गई है, जब कि हदीस में इसको बहुत बुरे गुनाहों में शुमार किया गया है, "बैहकी" (हदीस की एक किताब) की एक हदीस में आता हैः—

अनुवादः— ''ग़ीबत, ज़िना से ज़्यादा सख़्त है, सहाबा ने पूछा कि अल्लाह के रसूल! ज़िना से ज़्यादा सख़्त कैसे है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आदमी जिना करता है फिर वो तौबा करता है तो अल्लाह तआला उसकी तौबा कुबूल फरमा लेते हैं और गीबत करने वाले की उस वक़्त तक मग़फ़िरत नहीं होती जब तक वो शख़्स मॉफ़ न कर दे जिसकी उसने गीबत की है।''

(अल—बैहकीः6465)

ज़ाहिर है जिसकी ग़ीबत की गयी है समाज में उसको गिराने की कोशिश की गयी है और ये उसका एक बड़ा नुकसान है, इसलिये ग़ीबत को मुरदार भाई के गोश्त खाने के बराबर करार दिया गया है, जब तक उससे माफी न माँग ली जाए, उस वक़्त तक उस गुनाह से माफी मुश्किल है इसलिए कि ये बन्दों के अधिकारों में से है, अल्लाह तआला अपने अधिकार तो मॉफ कर देंगे लेकिन बन्दों के अधिकार उस वक्त तक मॉफ नहीं फरमाएंगे जब तक वो अदा न कर दिए जाएं या मॉफ न करा लिए जाएं।

कभी ऐसे हालात भी सामने आ जाते हैं कि जिसकी गीबत की गई उसकी मौत हो गयी या इसका खतरा है अगर मॉफी मांगने के लिए गीबत का जिक्र भी किया गया तो दूसरे पक्ष की तरफ से सख़्त प्रतिक्रिया होगी और इसके नतीजे में हालात और भी बिगड़ जाएंगे और फितना पैदा होगा, एक हदीस में ऐसी हालत का इलाज बताया गया है, इरशाद होता हैः—

अनुवादः— ''गीबत का कफ़्फ़ारा ये है कि जिसकी तुमने गीबत की हो उसके लिए इस्तिग्फ़ार करो और कहो कि ऐ अल्लाह हमारी और उसकी मग़फ़िरत फरमा दे।

(अल—बैहकीः 6519)

शायद ये हदीस उन्हीं हालात के लिए खास है कि जब मॉफी न मांगी जा सकती हो या उस से फितने का डर हो, इसलिए कि बैहकी की इससे पहले वाली हदीस में ये सॉफ—सॉफ कहा गया है कि जब तक माफी न मांग ली जाए उस वक्त तक उसका गुनाह माफ होना मुश्किल है, इसलिए इस दूसरी हदीस को खास हालात के साथ जोड़ना ही मुनासिब है।

जिस तरह गीबत करना सख्त गुनाह है, गीबत सुनना और ऐसी मजलिसों में शामिल होना भी गुनाह है, हदीस में आता हैः—

अनुवादः— ''जिसके पास एक मुसलमान भाई की ग़ीबत की गई और उसने अपने भाई की मदद की, तो अल्लाह तआला दुनिया व आख़िरत में उसकी मदद फरमाएंगे, और अगर उसने मदद न की तो अल्लाह तआला दुनिया व आख़िरत में उसकी पकड़ करेंगे।

(मुसन्नफ इब्ने अब्दुर्रज्जाकः 20258)

हदीस से मालूम हुआ कि अगर कभी ऐसी मजलिसों में शिरकत हो भी जाए और किसी की गीबत की जाए तो शरीक होने वाले की ज़िम्मेदारी है कि वो जिसकी ग़ीबत की जा रही है उसकी रक्षा करे, ये उसके लिए बड़े सवाब की बात है कि वो इसकी इज़्ज़त रख रहा है और उस मजलिस में उसको जलील होने से बचा रहा है, अल्लाह तआला भी दुनिया व आखिरत में उसकी मदद फरमाएंगे, उसको इज़्ज़त बख़्शेंगे और वो जिल्लत से बचा रहेगा, इसके उलट अगर वो मजलिस में पूरी तरह शरीक रहा, गीबत सुनता रहा और उस पर जरा भी ना पसंदीदगी का इज़हार नहीं किया तो उस के लिए वबाल है, इसका खतरा है कि वो दुनिया व आखिरत की जिल्लत उठाए।

सूरः हुजरात में अल्लाह तआला इरशाद फरमाता हैः—

अनुवादः— ''क्या तुम में से कोई ये पसंद करेगा कि अपने मुरदार भाई का गोश्त खाए, इससे तो तुम घिन करोगे''।

(अल—हुजुरातः12)

अजीब बात ये है कि आमतौर पर मजलिसों में गीबत

का सिलसिला जब चलता है तो किसी को भी ख़्याल नहीं रहता और इसमें मजा आने लगता है, इस आयत में इसका एक मनोवैज्ञानिक इलाज भी किया गया है, गीबत के मौके पर अगर ये कल्पना कर ली जाए कि जिसकी गीबत की जा रही है हक़ीक़त में उसका सड़ा हुआ गोश्त खाया जा रहा है तो इस कल्पना से ही मन भागने लगेगा, और ग़ीबत से नफ़रत सी पैदा हो जाएगी, जाहिरी तौर पर आदमी चाहे इसको महसूस ना कर सके लेकिन ये एक हक़ीक़त है, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ये मोजिजा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी कभी अल्लाह के हुक्म से ऐसी चीज़ें महसूस भी करा दीं, हदीस में एक वाकिया आता है कि एक बार दो औरतों ने रोजा रखा, रोजा उन दोनों को इतना लगा कि वो हलाक़त के करीब पहुँच गईं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक प्याला उनके पास भेजा और उन दोनों को उस में उल्टी करने का हुक्म दिया, दोनों ने उल्टी की तो उसमें गोश्त के टुकड़े और ताजा खाया हुआ खून निकला, लोगों को हैरत हुई तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि उन्होंने अल्लाह तआला की हलाल रोज़ी से रोज़ा रखा और हराम चीज़ों को खाया कि दोनों औरतें लोगों की गीबत करती रहीं। (अल—बैहकीः 2638)

इस हदीस से एक बात ये भी सामने आती है कि गीबत करने वाले के लिए नेकियाँ मुश्किल हो जाती हैं, उसका जेहन गलत कामों और बातों की तरफ मायल हो जाता है।

जिस तरह हदीस में गीबत करने वाले को मुरदार भाई का गोश्त खाने वाला कहा गया है, उसी तरह अगर कोई गीबत करने वाले को उसके इस बुरे अमल से रोकता है तो वो अपने भाई की हिफाजत करने वाला शुमार होगा।

अनुवादः— "गीबत की वजह से अगर किसी का गोश्त सुरक्षित नहीं रहा और कोई उसकी हिफाजत (गीबत करने वाले को गीबत से रोक कर) कर रहा है तो अल्लाह तआला ज़रूर उसको जहन्नम से आज़ादी अता फरमायेंगे।

(अल—बैहकीः 7643/29)

अल्लाह की तरफ से ये बदला उसको उसके अमल के मुताबिक मिल रहा है, वो दूसरों के गोश्त पोस्त और उसके जिस्म की हिफ़ाज़त कर रहा है, अल्लाह तआला उसके जिस्म की जहन्नम से हिफाजत फरमाएंगे।

❖❖❖

पृष्ठ.....06... का शेष

4. इसमें याद दिलाया जा रहा है कि तुम उन लोगों की संतान हो जिनको हमने नूह के साथ बचा लिया था तो तुमको इस पर आभारी होना चाहिए और केवल उसी अल्लाह की उपासना करनी चाहिए।

5. इस आयत में बख़्त नस्र के द्वारा की गई तबाही का वर्णन है जो बाबुल का राजा था, उसने बनी इस्राईल को बुरी तरह क़त्ल किया और बचे हुए लोगों को गुलाम बनाकर अपने साथ बाबुल ले गया, यह घटना सन् 586 ई0 पू0 की है।

6. लगभग 70 वर्ष तक वे बख़्त नस्र की गुलामी में रहे फिर ईरान के राजा ने बाबुल पर हमला करके उसको जीत लिया और यहूदियों पर तरस खा कर उनको दोबारा फिलिस्तीन में आबाद कर दिया, इस प्रकार उन्हें दोबारा खुशहाली मिली परन्तु जब उन्होंने अवज्ञाओं में सीमा लांघी तो एक बार फिर उन पर दुश्मन को मुसल्लत किया गया, यह दूसरी तबाही सन् 70 ई0 में रूमी सम्राट तैताउस (Titus) के हाथों हुई, यूँ तो बनी इस्राईल का इतिहास तबाहियों और बर्बादियों की एक निरंतर गाथा है लेकिन यह दो तबाहियाँ इतिहास के पन्नों पर बहुत गहरे शब्दों में अंकित है।

❖❖❖

सामूहिक कोशिश से पहले व्यक्तिगत कोशिश की ज़रूरत

मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

बे अस्ल और ला यानी बातों को अक्सर लोग ख़ुराफ़ात से ताबीर करते हैं, इस लफ़्ज़ का किस्सा यूँ बताया जाता है कि अरब में क़बील–ए–जुहैना के एक शख़्स का नाम "खुराफा" था जिसको जिनों की एक जमात उचक ले गई थी और वह उनके पास बहुत दिनों तक मुक़ीम रहा, फिर जब उसको रिहाई हासिल हुई और अपनी क़ौम में वापस आया तो वह बेशुमार ऐसी ऐसी बातें और किस्से बयान करने लगा कि बिल आख़िर लोग उसकी सच्चाई पर शुब्हा करने लगे, और कुछ ही दिनों बाद वह अपने झूठ बोलने और बात को बढ़ा चढ़ा कर बोलने में ऐसा मशहूर हुआ कि ख़ुराफात हर बेअस्ल और ला यानी बात का नाम पड़ गया, और उसी वक़्त से ख़ुराफात की इस्तिलाह चल पड़ी।

यह किस्सा तारीख़ी हैसियत से चाहे जैसा कुछ भी हो, लेकिन इस हक़ीक़त से इंकार नहीं किया जा सकता कि झूठ बोलने और मुबालगा (बढ़ा चढ़ा कर बात करने) आमेज़ी में बड़ी लज़्ज़त है, मसलन एक बातूनी शख़्स को आप ले लीजिए, उसको जितनी दिलचस्पी मज्लिस जामने और मुबालगा आमेज़ गुफ़्तगू से होगी उतनी शायद किसी और चीज़ से न हो चुनांचे वह अपनी इस हवस को पूरा करने के लिए बे हक़ीक़त वाक़िआत को अस्ल बना कर पेश करने और उसमें रंग भरने के लिए अपनी सलाहियतों का इस्तेमाल करता है, वह लोगों को हंसाता है और उनको मुतअस्सिर होते हुए देख कर बे हद खुश होता है।

हमारे मुआशरा में एक बड़ी तादाद ऐसे लोगों की मौजूद है जिन का मिज़ाज ही यह है कि वह हर बात में रंग भरते और उसको मुबालगा के साथ बयान करते हैं, इस तरह के लोग अक्सर दूसरों से सुनी सुनाई बात या किसी वाक़िआ को ऐसे ढंग से नक़्ल करते हैं कि अगर वह मामूली और नाक़ाबिले तवज्जो हो तब भी बहुत ज़्यादा ख़ौफनाक और क़ाबिले तवज्जोह बन जाए, वह एक बात में कई बात और एक पहलू में अनेक पहलू मिला कर कुछ इस तरह बयान करते हैं कि सुनने वाले पर असर पड़ना ज़रूरी होता है।

यह एक आदत या मामूल है जिसमें इल्म व जहल, अफ़राद व जमात और छोटे बड़े का कोई दख़ल नहीं है, बल्कि एक वाक़िआ पेश आता है, जो अपनी उमूमियत के लिहाज़ से सब पर स्पष्ट है, मजलिसों व महफिलों में इसका चर्चा है, अख़बारात में इसकी ख़बरें छप रही हैं। लेकिन आप देखेंगे कि जितनी मुख़्तलिफ मजलिसें हैं उतनी ही मुख़्तलिफ बातें हो रही हैं, वजह बिलकुल ज़ाहिर है कि हर शख़्स इस खबर या वाक़िआ को ज़्यादा से ज़्यादा अहम बना कर पेश करना चाहता है, ताकि उसी के मुताबिक उस की अहमीयत का इज़हार हो सके, और किसी न किसी पहलू से वह लोगों की निगाहों में मुम्ताज़ नज़र आये।

किसी बात को फैला कर उसको अहम बनाने में ना समझी का वह जज़्बा काम करता है जिसमें इन्सान को अपनी शख़्सियत का एहसास होता है, यही एहसास बाज़ वक़्त बहुत ज़्यादा मुबालगा पर मजबूर करता है, जहां से एक मामूली हैसियत का इन्सान थोड़ी देर के लिए बड़ी शख़्सियत की शक्ल में अपने आईने में दिखाई पड़ता है।

मुबालगा या किज़्ब बयानी एक ही जिन्स की दो चीजें हैं, इस जिन्स में चूंकि नफ़्स को बे हद लज़्ज़त और खुशी महसूस होती है, इसलिए इसकी तरफ़ मैलान होना एक फितरी बात है, नफ़्स के इस मैलान को अगर कोई चीज़ रोक सकती है तो

सिर्फ दीनी बेदारी या खुदा का ख़ौफ़ ही हो सकता है, सच बोलने में बाज़ औक़ात बज़ाहिर नुक़सान और झूठ में नफ़ा नज़र आता है, लेकिन इसके बावजूद झूठ का बातिनी नुक़सान इस क़द्र भयानक है कि इस की मिसाल समाज में क़दम क़दम पर मिलती है चोर अपनी चोरी में पकड़ा जाता है तो वह मुख़्तलिफ़ तरीक़ों और झूठ के ज़रीए अपनी बे गुनाही को साबित करने की कोशिश करता है, लेकिन जूं ही कोई फ़ौरी और तकलीफ़ दे सज़ा उसको मिली वह फौरन अपनी ग़लती का इक़रार कर लेता है, हालांकि अगर वह सही बोलता और अपनी चोरी पर नदामत का इज़हार कर लेता तो शायद उसको यह सज़ा भी न भुगतनी पड़ती, नफ़्स के इसी रुजहान को बदलने के लिए शरीअत ने बार बार समाज की इस ख़तरनाक बीमारी की तरफ़ तवज्जोह दिलाई है और इससे बाज़ रहने की तरग़ीब दी है।

इसके विपरीत दुनिया के किसी भी समाज को आप ले लीजिए, कहीं भी झूठ, मुबालगा और दरोग़ बयानी से रोकने के लिए किसी क़ानून या झूठ बोलने पर किसी ख़ास क़ानूनी सज़ा का वजूद नहीं है, अगर हम ग़ौर करें तो यह बात बिल्कुल साफ़ तौर से नज़र आती है कि जिस समाज के लोग आपस में झूठ बोलने को सही ठहराते हों वह हरगिज़ कामयाब और मुअस्सिर सोसाइटी क़ाइम करने की सलाहियत नहीं रखते, और न वह दुनिया में कोई मानसिक या बौद्धिक इंक़िलाब बरपा करने की सामर्थ्य रखते हैं।

इस्लामी मुआशरा अपने पहले दौर में जिन ख़ुसूसीयात का हामिल था, उन में हक़ गोई और बे बाक़ी को बड़ी अहमीयत हासिल थी, बड़े–बड़े बादशाहों के सामने हक़ गोई का वह मेयार उस मुआशरा के लागों ने क़ाइम किया जिस की मिसाल अब नहीं मिलती है, यही वजह थी कि सोसाइटी निहायत पाक व साफ़ और अख़्लाक़ी मूल्यों का एक आला नमूना थी वहां झूठ व बोहतान और रियाकारी व मस्लहत बीनी का कहीं वजूद न था।

लेकिन ज़माना जूं जूं गुज़रता गया, अख़्लाक़ी पस्ती भी ज़ाहिर होती गयी और अब इस्लामी मुआशरा में वह सारी खराबियाँ और तमाम खतरनाक बीमारियाँ दाख़िल हो चुकी हैं जो न सिर्फ चंद लोगों या किसी जमात के लिए खसारा व हलाकत का बाइस हैं, बल्कि पूरी सोसाइटी इस ख़तरा से दो चार है, क़दम– क़दम पर ऐसी मिसालें मिलती हैं जिनमें सरा सर अख़्लाक़ी गिरावट और ज़ेहनी गिरावट की कार फरमाई होती है।

समाज का एक शख़्स कभी अपने दूसरे साथी के लिए किसी इज़्ज़त, बड़ाई और बलन्दी को न सिर्फ यह कि गवारा नहीं कर सकता, बल्कि उस की पूरी कोशिश यह होती है कि इज़्ज़त व बड़ाई उस शख़्स से मुंतक़िल हो कर उसकी तरफ़ आ जाए, अगर सिर्फ इतना ही होता कि किसी की इज़्ज़त व बलन्दी को देख कर यह तमन्ना उभरती कि वह उसके अन्दर बाक़ी रहते हुए, अपने अन्दर भी पैदा हो जाए तो ज़्यादा नुक़्सानदेह न था, लेकिन नफ़्स की ख़्वाहिश यह होती है किः–

• दूसरे को नुक़्सान पहुंचा कर ख़ुद फाइदा हासिल करना।
• दूसरे को ज़लील करके खुद इज़्ज़त व वक़ार पाना।
• दूसरे को मुहताज बना कर खुद साहिबे दौलत होना।

मैं समझता हूं कि इन ख़राबियों की एक ही वजह है, और वह यह है कि झूठ के साथ हसद भी पूरी तरह अपना काम करता है, ज़ेहन के इस रुजहान को बदलने के लिए पहले उन्हें छोटी छोटी बीमारियों का ख़ातमा करना होगा, और उसके लिए सामूहिक कोशिश से पहले व्यक्तिगत कोशिश की ज़रूरत है, इसके बग़ैर सारी कोशिशें बे फायदा और बेकार हैं। ◆◇◆

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

इसी तरह मृत्यु के दिन मृतक के लिए खाना पकवाना कोई अर्थ नहीं रखता क्योंकि वह तो निर्जीव में सम्मिलित हो जाता है, इसके बजाए जन्म के दिन उत्सव मनाकर खाना पकवाना चाहिए। बादशाह ने इस उत्सव का नाम आश–ए हयात रखा। शेर और जंगली सुअर का माँस इसलिए हलाल कर दिया गया कि उसके खाने से बहादुरी पैदा होगी। चाचा, मामा और निकट सम्बन्धियों की बेटियों से निकाह हराम कर दिया गया कि इससे उनके पतियों की इच्छा कमज़ोर हो जाती है। मर्द के लिए 16 वर्ष की आयु और औरतों के लिए 14 वर्ष की आयु तक निकाह वैध नहीं रखा गया क्योंकि कम उम्र की सन्तान कमज़ोर होती है। सोना और रेशम पहनना अनिवार्य घोषित कर दिया गया। एक दिन मैंने सरकार के मुफ़्ती को शुद्ध रेशम का कपड़ा पहने देखा तो पूछा कि क्या रेशम पहनने की कोई रिवायत निकल आयी है? उन्होंने उत्तर दिया कि जिस शहर में रेशमी कपड़े का सामान्य चलन हो जाए वहाँ रेशम पहनना वैध है। मैंने कहा, स्पष्ट रूप से तो यह रिवायत मालूम होती है कि बादशाह का यह आदेश है। उन्होंने कहा इसके अतिरिक्त भी रिवायत मौजूद है।

नमाज़ रोज़ा और हज इससे पहले ही अनिवार्य नहीं रह गए थे। कुछ व्यभिचार से पैदा सन्तानें जैसे मुल्ला मुबारक के बेटे शेख अबुल फजल ने उनकी बुराई और उपहास में तर्क के साथ एक लेख लिखा जो बादशाह को पसन्द आया, इसपर बहुत उपकार किया।

अरबी की हिजरी तिथि भी बदल दी गयी। इसके स्थान पर साल जुलूस लिखा जाने लगा जो 963 हि० में हुआ था। महीनों का निर्धारण गैर अरब बादशाहों के तर्ज पर किया गया जो पाठयक्रम की पुस्तकों में हुआ करता है। ज़रदुश्तियों के विश्वास के अनुसार 14 ईदें तय की गयीं मुसलमानों की ईदों की रौनक समाप्त हो गयी। जुमा का खुत्बा बाकी रखा गया क्योंकि इसमें बादशाह का नाम होता था। इसमें बूढ़े लोग भी सम्मिलित होते थे। सिक्कों और मोहरों में अल्फी (हज़ार) तिथि लिखी जाने लगी, यह दिखाने के लिए कि 1000 साल के बाद मुहम्मद (सल्ल०) का धर्म समाप्त होकर रहेगा। अरबी पढ़ना या जानना बुराई हो गयी। फिक़्ह, कुरआन की व्याख्या और हदीस जानने वालों पर लअ़नत होने लगी। नक्षत्र विद्या आयुर्विज्ञान, गणित इतिहास और कहानियों का ज्ञान प्रचलित हुआ। अरबी के विशेष अक्षर जैसे से, हे, ऐन, स्वाद, ज़्वाद, तोय, जोय, को शब्दकोष से निकाल दिया गया। अब्दुल्लाह को ऐन से लिखने की बजाए अलीफ से लिखा जाने लगा और बड़ी हे की जगह छोटी हे लिखी जाने लगी तो बादहशाह खुश होता। फिरदौसी के शाहनामे के यह दो शेअ़र बादशाह को बहुत पसन्द थे, इनको वह प्रमाण बनाए हुए था।

ज शेर शूत्र खुर्दन व सूसमार
अरब रा बजाए रसीदा अस्तकार
कि मुल्क–ए–अ़जम रा कुनब्द आरज़ू
तफो बाद बर चर्ख गरदूँ कफ़ो

बादशाह जो भी शेअर अपनी इच्छा के अनुसार गुरुओं से सुन लेता उसको प्रमाण बना लेता। सज्ज राक का वह शेअर जिसमें हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) के मुबारक दाँतों के शहीद होने का उल्लेख है उसको पसन्द था, इस तरह धर्म के हर इस्लामी प्रश्न और विश्वास में जैसे पैगम्बरी, तर्क, चाँद का देखना, तकलीफ, तकवीन, हश्र और नश्र, चाहे वह बुनियादी बातों से सम्बन्धित हो या गौड़ बातों से, उस पर हर तरह के सन्देह प्रकट किया जाता, उसका उपहास किया जाता। यदि कोई व्यक्ति उत्तर देने या आलोचना करने पर आमादा होता तो उसपर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता। कोई बात

स्वीकार्य नहीं समझी जाती। बहस में बराबर होने की शर्त है लेकिन किसी बात को यदि ज़बरदस्ती मनवाने का अधिकार प्राप्त हो तो फिर क्या बहस हो सकती है.......... । बहुत से परिवार इस बहस में पड़े, लेकिन बहस की बजाए ज़ोर–ज़बरदस्ती होती, धर्म का सौदा करने वाले बादशाह को खुश करने के लिए संदर्भ से हटी और संदिग्ध बातें हर जगह से ला कर प्रस्तुत करते।

रात को बादशाह की मजलिस में आदेश दिया जाता कि चालीस आदमी जिस मजलिस में बैठें और जो चाहें प्रश्न करें। यदि कोई किसी ज्ञान की बात के बारे में पूछता तो कहा जाता कि मुल्लाओं से पूछो, यहाँ तो बुद्धि और विवेक की बातें पूछी जाएँ। जीवनी की किताबें पढ़ी जाएँ तो सहाबा (रजि) और विशेष रूप से तीन खलीफा, फदक के मामले और सिफ़्फ़ीन के युद्ध के बारे में ऐसी बातें सुनने में आतीं कि उन्हें मुँह से बयान नहीं किया जा सकता। शीया जीतने वाले और सुन्नी हारने वाले थे। अच्छे बन्दे डरे डरे रहने लगे और शरारती सुरक्षित थे। प्रतिदिन कोई न कोई नया आदेश निकलता, नई आपत्ति जारी की जाती। तरह– तरह के सन्देह पैदा किए जाते। सकारात्मक को नकारात्मक घोषित किया जाता। स्वीकार्य बातें निरस्त हो गयीं और निरस्त बातें स्वीकार्य होने लगीं। जो सबसे निकट थे वह दूर हो गए। जो दूर थे वह निकट हो गए. पूरे देश में बड़ा शोर हंगामा हुआ। मुल्ला शेरी ने अपनी एक कविता में उस ज़माने की हालत लिखी है।

नौरोज़ के समारोह के अवसर पर अधिकतर उलमा और नेक लोग बल्कि काज़ी और मुफ़्ती शराब पीने पर मजबूर हो जाते थे।

इन इज्तेहाद करने वालों में विशेष रूप से कवियों के बादशाह फैजी तो यह कहकर पीते कि हम ये प्याला फकीहों के अंधेपन के नाम पर पीते हैं।

मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूँनी ने अकबर की धार्मिक नीति का जो चित्रण किया है, वह अकबर की धार्मिक उदारता को टुकड़े–टुकड़े कर के रख देता है। मुल्ला साहब पर यह आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने जो कुछ लिखा है उसमें स्वयं उनके धार्मिक भेदभाव और कट्टरपन को दखल है। इसलिए वह स्वीकार्य नहीं हैं, लेकिन स्वयं मुल्ला साहब ने लिखा है कि सावधानी की माँग तो यह थी कि मैं इन हालात को न लिखता, लेकिन अल्लाह तआला गवाह है और उसका गवाह होना काफी है कि मेरी इन बातों को लिखने का उद्देश्य केवल इस धर्म के साथ दर्द और मुस्लिम मिल्लत के साथ सहानुभूति प्रकट करने के अतिरिक्त कुछ नहीं है जो आज अजनबी बन गया है और उसके पंखों की छाया इस दुनिया के इन्सानों पर से उठती जा रही है। मैं तो अल्लाह की क़सम निन्दा, घृणा, ईर्ष्या और भेदभाव से पनाह माँगता है।

मुल्ला साहब की निष्पक्षता पर विश्वास न किया जाए, लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने अकबर के जमाने की राजनैतिक घटनाओं को लिखने में उसकी प्रतिष्ठा को हर तरह से बचाए रखा है और कहीं उसकी शान को ठेस नहीं पहुँचायी है लेकिन उसके धार्मिक विश्वासों के सम्बन्ध में वह अवश्य बेकाबू हो गए हैं और उनके कलम से अकबर के दीन–ए–इलाही को जो घाव पहुँचे वह आज तक भर न सके। दीन–ए–इलाही के समर्थन में बहुत कुछ लिखा जा चुका है लेकिन मुल्ला साहब ने जो कुछ लिख दिया है उसी की रोशनी में दीन–ए–इलाही को समझा गया है और यदि दीन–ए इलाही वास्तव में उपहास की सभी बातों से मुक्त होता और यह स्वीकार्य समझा जाता तो अबुल फजल का कलम इसे गुल–ए–गुलजार बनाकर रख देता। उसका कलम अकबर की प्रतिष्ठा और शौर्य दिखाने में चमत्कार बनकर उभरता रहा लेकिन दीन–ए–इलाही के उल्लेख में उसका चमत्कारी कलम गूँगा बनकर रह गया है। जरा अकबर के धार्मिक दृष्टिकोण को हम अकबर नामा और आईन–ए–अकबरी की रोशनी में देखने की कोशिश करेंगे, ताकि पाठको को अनुमान हो सके कि वास्तव में इसकी वास्तविकता क्या थी।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

अच्छे व्यवहार की शिक्षा

मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी

यात्रियों के साथ अच्छा व्यवहारः—

इसके बाद इब्नुस्सबील यानी मुसाफिरों का जिक्र है। अपरिचितों और यात्रियों की सेवा को सदा ही पुण्य और सवाब का काम समझा गया है, उनके लिए सराएं बनायी गयीं और उनके खाने—पीने और आराम व राहत का प्रबंध किया गया। अब सेवा की भावना समाप्त हो गयी है और इन चीजों का स्थान बड़े—बड़े भव्य होटलों ने ले लिया है। इन होटलों से न तो हर व्यक्ति के लिए फायदा उठाना आसान है और न ही यात्रियों के सारे मसले हल होते हैं। जो व्यक्ति वतन से दूर और यात्रा की स्थिति में हो उसे अनेक कठिनाइयां पेश आ सकती हैं। रुपये पैसे का न होना, स्वास्थ्य का बिगड़ जाना, निवास एवं भोजन की उचित सुविधा का न होना, कारोबार तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए भाग—दौड़ में कष्टों का सामना करना आदि एक सामान्य सी बात है। यदि यात्रा विदेश की हो तो व्यक्ति अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के तहत कुछ अन्य प्रकार की परेशानियों में घिर सकता है।

इस पहलू से देखा जाए तो आज के युग में यात्रा की समस्याएं पहले से अधिक विस्तृत और जटिल हो गयी हैं। इस्लाम पूरे समाज की यह जिम्मेदारी ठहराता है कि वह ऐसे तमाम अवसरों पर यात्री के साथ अच्छे से अच्छा व्यवहार करे, ताकि वह अपने को अपरिचित महसूस न करे और जिस उद्देश्य के लिए उसने घर—बार और वतन छोड़ा था वह यात्रा के कष्टों के कारण पूरा होने से न रह जाए।

गुलामों और आश्रितों के साथ अच्छा व्यवहारः—

जो लोग सेवा और अच्छे व्यवहार के अधिकारी हैं उनमें गुलामों और अधीन लोगों को विशेष रूप से शामिल किया गया है। अल्लाह का फरमान (आदेश) हैः— ''और उन गुलामों के साथ अच्छा व्यवहार करो।''

(4:36)

कुरआन अवतरित होने के शताब्दियों पहले से गुलामी की प्रथा थी। गुलामों के साथ पशुओं से भी बुरा व्यवहार किया जाता था और उनके कोई अधिकार नहीं थे। कुरआन गुलामी को समाप्त करना चाहता है, इस विषय में उसने जो प्रयास किये हैं यहां उन पर वार्ता करने का अवसर नहीं है, केवल इतना कहना है कि उसने इस बारे में प्रथम प्रयास यह किया कि गुलामों, आश्रितों और अधीनों के अधिकार निश्चित किये हैं और उनके साथ अच्छे व्यवहार की ताकीद की है। इस विषय से संबंधित बहुत सी हदीसों में से यहां केवल एक हदीस प्रस्तुत की जा रही है।

हज़रत अबू जर (रज़ि०) की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमायाः— ''ये गुलाम तुम्हारे भाई हैं, जो खुद खाओ वही इनको खिलाओ और जो खुद पहनो वही इनको पहनाओ। इनकी शक्ति व सामर्थ्य से अधिक इनसे काम न लो। यदि इन पर शक्ति से अधिक बोझ डालो तो उसके उठाने में इनकी सहायता करो।''

(बुखारी, मुस्लिम)

गुलामों और आश्रितों के प्रति अच्छे व्यवहार का आदेश देने के बाद अंत में आदेश दियाः— ''निस्संदेह अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो घमंडी है और डींगें मारता है।''

(4:36)

इस आयत में ''मुखताल'' और ''फखूर'' दो शब्द आये हैं। यद्यपि ये दोनों शब्द समानार्थी हैं, परन्तु फिर भी इनमें थोड़ा सा अन्तर है। ''मुखताल'' वह व्यक्ति है जिसके कामों से घमंड का प्रदर्शन हो। ''फखूर'' उस व्यक्ति को कहा जाता है जो शेखी बघारता और अपनी बड़ाई बयान करता फिरे और डींग मारे। तात्पर्य यह कि अल्लाह तआला उस व्यक्ति को बहुत नापसन्द करता है जिसकी कथनी और करनी से घमंड और अभिमान प्रकट होता हो। घमंड इन्सान को अल्लाह की इबादत और बन्दों की सेवा, दोनों ही से रोकता है। जबकि इन दोनों विशेषताओं के कारण ही इन्सान की इन्सानियत बाकी रहती है। वरना वह पशु से भी नीचा हो सकता है।

नैतिक शिक्षा के साथ कानूनी सुरक्षा भीः—

एक बात नोट करने की यह है कि यहाँ माँ—बाप, नातेदारों, दरिद्रों, मुहताजों और समाज के अन्य कमज़ोर व्यक्तियों तथा वर्गों के साथ अच्छे से अच्छा और उत्तम से उत्तम व्यवहार करने की शिक्षा दी गयी है। यह शिक्षा मक्का से मदीना तक कुरआन उतरने की पूरी अवधि में निरंतर जारी रही। इस प्रकार समाज में एक—दूसरे के साथ सहानुभूति और प्रेम की भावना निरंतर पैदा की गयी और कमज़ोरों, उपेक्षितों और हक़दारों के अधिकार पहचानने और उनके साथ अच्छा व्यवहार करने की लगातार प्रेरणा दी जाती रही, फिर एक विशेष चरण में इस्लाम ने इन सबके अधिकार निर्धारित किये और कानूनी सुरक्षा प्रदान की, ताकि कोई व्यक्ति किसी कमज़ोर पर अत्याचार न कर सके और कोई हकदार अपने अधिकार पाने से वंचित न रहे।

मज़दूरों के अधिकारः—

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया इन्सान की वह रोजी सबसे ज़्यादा पवित्र (पाकीज़ा) है जो उसने अपने हाथ से मेहनत करके कमायी है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फरमायाः उससे बेहतर कोई खाना नहीं जो आदमी अपने हाथ से कमा कर खाता है। हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम अपने हाथों से रोज़ी कमाते थे।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया इस संसार में जितने भी संदेष्टा आये हैं सबने बकरियां चरायी हैं। सहाबा—ए—किराम ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! आपने भी फरमायाः— हाँ। मैं भी कुछ कीरात (मुद्रा का नाम) के बदले मक्का के वासियों की बकरियां चराया करता था। (बुखारी)

इस्लाम की इन तालीमात का अर्थ यह है कि जो भी व्यक्ति मेहनत करके रोज़ी कमाता है और मेहनत करके अपना घर बार चलाता है वह समाज का एक सम्मानीय व्यक्ति है, कोई भी मज़दूरी करने वाला इस्लाम की नज़र में सम्माननीय है, अर्थात उसे इज़्ज़त की निगाह से देखता है।

(साभार कान्ति नई दिल्ली अक्तूबर—2011 से ग्रहीत)

❖❖❖

मुस्लिम शासकों के नाम

(आइशा शरफ़ आस)

अब न उठे तो कब उठोगे?
जब मोहलते अमल गुज़र जाएगी
तब उठोगे, कब उठोगे?
जब ख़ूँ के दरया बह जाएं
और लाशें गिन्ना मुश्किल होंगी
तब उठोगे, कब उठोगे?
नन्हे बच्चे ख़ून में लतपत सिसक रहे हैं
जब कलयाँ सारी मुरझा जाएंगी
तब उठोगे, कब उठोगे?
बिलक रहीं हैं मायें बहनें
भाई के सीने छलनी छलनी
गर सब कुछ मिट्टी हो जाएगा
तब उठोगे, कब उठोगे?
ग़ज़्ज़ा की धरती चीख़ रही है
कहाँ हैं मुस्लिम, कहाँ हैं हाकिम?
जब चीखें सारी दब जाएंगी
तब उठोगे, कब उठोगे?
किस आस में बैठे हैं
अक़्सा में ईसा उतरेंगे जब
तब उठोगे, कब उठोगे?

❖❖❖

तीन कुव्वतों की ज़रूरत

ज्ञान, धन और सत्ता

मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

मैं जोधपुर, औरंगाबाद और लखनऊ के कॉलेजों में जा चुका हूँ, जब लड़कों से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने को कहा जाता है तो आधी अंग्रेज़ी और आधी उर्दू बोलते हैं। अजीब है कि न इधर के हैं और न उधर के। इससे छुटकारा पाने, खोया हुआ सम्मान वापस लाने और प्रतिष्ठा बहाल करने के लिए तीन ताकतों की ज़रूरत है। एक पद, दूसरा धन और तीसरा ज्ञान। ओहदे में शक्ति है, पैसे में ताक़त है और इल्म में कूव्वत है। पद की शक्ति अपनी जगह है उसका इन्कार नहीं। पैसे के अन्दर पॉवर है, यदि कोई इसका इन्कार करे तो ग़लत है।

और ज्ञान के अन्दर भी शक्ति है, इसका कोई इन्कार करता है तो गलत है, लेकिन इन तीनों में ज्ञान की शक्ति सबसे अधिक है। इल्म की कूव्वत के आगे बड़े से बड़े झुक जाते हैं। अल्लाह ने इल्म के अन्दर ताक़त रखी है। इल्म दिमाग है, पद और सत्ता ढ़ाँचा है, धन चलने–दौड़ने के लिए पैर और सवारी है। यदि शरीर के अन्दर शक्ति हो तो ज़ाहिर है कि उससे सारे काम जुड़े हैं और यदि पैर में ताकत है तो चल सकेगा। एक स्थान से दूसरे स्थान जा सकेगा। इसलिए जैसा कि मैंने पहले कहा कि धन पैर है खड़े होने के लिए और ज्ञान बड़े होने के लिए और ओहदा लोगों के मार्गदर्शन तथा उत्पत्तियों को ठीक करने के लिए है। तो तीनों में अल्लाह ने ताक़त रखी है। अब तीनों चीज़ों में से कोई भी हमारे पास नहीं है। अर्थात पद हमारे पास नहीं है, पैसा भी ओहदे से ही सम्बन्धित है। ओहदा जब कमज़ोर होता है तो पैसा होते हुए भी आदमी कमज़ोर होता है। लेकिन एक चीज़ है ज्ञान वह बहरहाल अपने अन्दर आज भी ताक़त रखता है और लोहा मनवा लेता है और जो कुर्आन में आता है ''लियुज्हिरहू अलद्दीनि कुल्लिही'' अर्थात अल्लाह चाहता है कि ये दीन भारी पड़ जाए और सारे धर्म दब जाएं। तो ये सब ओहदे और ताक़त से होगा और दूसरा इल्म से होगा अर्थात समस्त धर्म शैक्षिक रूप से किस जगह है और इस्लाम किस स्थान पर है तो इस्लाम ज़ाहिर है कि पूरा का पूरा इल्म है और ये एक सर की हैसियत रखता है और जितने धर्म हैं वह सब सर से नीचे हैं, और ज़ाहिर है कि सर, सर है, सर में दिमाग़ है जो सबको चलाता है। आदमी अक़्लमंद हो और यदि उसका पैर कमज़ोर हो तो वह बैठे–बैठे भी काम कर सकता है। हमारे डॉक्टर आसिफ किदवाई ने बहुत सी किताबें लिखी हैं, और क्या क़लम था उस अल्लाह के बन्दे का, उनका हाल क्या था? मैं उनके पास हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0 के साथ कभी–कभी जाता था। लगभग 18 साल की उम्र से वह बिस्तर पर थे और 69 साल तक एक करवट पर रहे। पूरा बदन उनका जख़्मी हो गया। यहां तक कि अन्तिम समय में हमारे हज़रत मौलाना रह0 उनके पास

गए। इससे पहले कभी उन्होंने शिकायत नहीं की, लेकिन उस दिन कहा, हज़रत! बर्दाश्त नहीं होता, दुआ कर दीजिए कि ईमान पर ख़ात्मा हो जाए। लेकिन सब काम लेटे–लेटे करते थे। किताब खोल लेते और यूं एक हाथ से लिखते तथा एक हाथ से पढ़ते थे। इस तरह पचास साल तक किया और पचास–साठ से ज़्यादा किताबों के लेखक हैं। ये है दिमाग। तो ज्ञान बहुत विस्तृत चीज़ है। जिसको अल्लाह ने पैसा दिया है वह ताक़त है, उससे चलता है और खड़ा होता है तथा पद व सत्ता गाइड है, उससे मार्गदर्शन करता है। अतः अब लड़ाई किसी भी तरह की जाइज़ नहीं, जैसा कि एक ज़माने से रहा है कि ये अंग्रेजों की ज़बान है कि अंग्रेज़ी सीखी नहीं जाएगी। अंग्रेज़ों ने इसका विरोध किया। लेकिन हमारे उलमा ने ऐसा किया था मगर अब वह दौर चला गया, उस समय उसकी आवश्यकता थी।

अब अंग्रेज़ी हमारी ज़बान है इसलिए कि सारी ज़बाने खुदा की हैं, इन सब ज़बानों में खुदा की निशानियां हैं ''वख़्तिलाफु अलसिनतिकुम व अल्वानिकुम'' तो उसकी निशानियाँ अलग हैं, जिस तरह अल्लाह को पहचानने की सूरतें अलग–अलग हैं ऐसी ही ज़बानें अलग–अलग हैं, तो जिस तरह उर्दू में हम्द व सना अल्लाह की स्तुति व प्रसंशा होती है, अरबी में होती है, उसी तरह हिन्दी और अंग्रेज़ी में भी हम्द व सना होती है। अल्लाह की प्रसंशा उद्देश्य है चाहे किसी भाषा में हो, अब यदि कोई केवल हिन्दी जानने वाला है, उर्दू नहीं जानता तो अल्लाह की हम्द कैसे करेगा? तो उसको हिन्दी में करना चाहिए। अल्लाह के लिए हिन्दी अजनबी नहीं है, वह समस्त भाषाओं का रचयिता है, उसके लिए कोई भी मुश्किल नही है, तो हमारे लिए ये ज़रूरी हो गया है कि हम ज्ञान व धन दोनों शक्तियों को लेकर उस तीसरी ताकत तक पहुंचने की कोशिश करें और उसके माध्यम से इस्लाम को आम करें। ये हमारी ज़िम्मेदारी है। कितने ऐसे लोग हैं जो कॉलेजों में भाग रहे हैं कि अंग्रेज़ों का दौर चला गया लेकिन अंग्रेज़ी को छोड़ गया और अंग्रेज़ी के जो प्रभाव हैं उनको छोड़ गया। अब उनके प्रभाव को इस्लामी प्रभाव में बदलना है और जिस प्रकार फारसी को मुसलमान बनाया है ऐसे ही अंग्रेज़ी को भी मुसलमान बनाना है, और ये हो जाएगा कुछ दिनों में। क्योंकि इस्लामी लिट्रेचर अंग्रेज़ी में बहुत आ रहा है यहां पर काम कम हो रहा है, बाहर बहुत ज़्यादा हो रहा है। ऐसा लगता है कि कुछ दिनों में अंग्रेज़ी भाषा मुसलमान हो जाएगी, इतना लिट्रेचर आ रहा है। अब हम लोग उनकी मदद करें और अपने बच्चों को उनकी झोली में जाने से पहले बचा लें, क्योंकि अब उनकी दो चीज़ें हैं, नम्बर एक ज़बान लाए हैं, नम्बर दो अपना कल्चर लाए हैं, और होता ये है कि जब किसी का प्रभुत्व हो जाता है तो उसका प्रभाव शेष रहता है और उसके साथ उसका कल्चर भी भाता है जैसे कि एक दौर मुसलमानों का आया था, लोग उस पर गर्व करते थे।

❖❖❖

पूज्य तू केवल रब को मान
ध्यान पूर्वक पढ़ क़ुर्आन
नबी मुहम्मद के पैरो को
अपना प्रिय भाई मान
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

इदारा

हाथों की कमाई

डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रह0 किसी सफर पर थे। जहाँ ठहरे थे वहाँ देखा कि एक व्यक्ति ककड़ी से भरी टोकरी सर पर उठाए चलता हुआ एक हौज़ के पास पहुँचा और अपनी टोकरी उतार दी। फिर बड़े सुकून से वज़ू किया और नमाज़ पढ़ी। उसकी उस इत्मिनान वाली नमाज़ से हज़रत निज़ामुद्दीन पर बड़ा असर हुआ।

नमाज़ बाद उसने टोकरे को तीन बार पानी से धोया और दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए एक एक ककड़ी को धोता रहा जब सारी ककड़ियाँ धुल गईं तो पूरे टोकरे को दोबारा तीन बार पानी में डुबोकर निकाला और उसे किनारे पर रख दिया ताकि सारा पानी टपक जाए। जब पानी पूरी तरह टपक गया तो उसने टोकरा सर पर उठाया और अपनी मंज़िल को चल पड़ा। हज़रत निज़ामुद्दीन तुरन्त उसके पास पहुँचे और एक अशरफी उसके हाथ में दे दी।

उस सज्जन व्यक्ति ने बड़ी नर्मी से शुक्रिया कहा और अशरफी लौटा दी। हज़रत निज़ामुद्दीन ने कहा, अरे भाई! इन ककड़ियों को तुम बाज़ार में बेचोगे तो आने दो आने से अधिक न मिलेगा, रब ने मेरे माध्यम से अशरफी भेजवाई है, इसे रख लो, लौटाना मुनासिब नहीं।

उसने कहा आइये बैठकर बात करते हैं। दरअसल मेरे अब्बू भी यही कारोबार करते थे। जब उनका देहांत हुआ तो मैं बहुत छोटा था और लालन पालन का दायित्व माँ के कमज़ोर कंधों पर आया जब उनकी भी मृत्यु होने लगी तो उन्होंने कुछ रक़म मुझे दी और कहा कि इसमें कुछ रूपये तुम्हारे व्यापार हेतु और कुछ रूपये मेरे कफ़न—दफ़न के लिए हैं, तुम्हारे अब्बू के जीवन की कुल जमा पूँजी यही है, इसीसे मेहनत और दिलो जान से कारोबार करो और किसी से मदद के नान पर एक ढेला भी न लो। हज़रत! अब आप ही बताइये कि मैं बिना मेहनत किये ये अशरफी क्यों लूँ? हज़रत लाजवाब हुए और उसका कहना मानने पर मज़बूर हुए।

हदीस की किताबों में है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा कि किसी ने इससे बेहतर खाना कभी नहीं खाया कि आदमी अपने हाथ की मेहनत का खाए।

इसीलिए इस्लाम में भिक्षावृत्ति को नापसन्द किया गया और मेहनत की कमाई को पसन्द की निगाह से देखा गया है, पवित्र हदीस में अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मल सल्ल0 का कथन है कि कोई अपनी रस्सी लेकर पहाड़ पर जाए और लकड़ी का एक बोझ अपनी पीठ पर लाद लाए, उसको बेचे, अल्लाह इसकी वजह से उसकी ज़रूरत भर का सामान देदे तो यह उसके लिए उससे बेहतर है कि वह लोगों से माँगता फिरे, लोग उसे दें या न दें, यह उनकी खुशी पर निर्भर है।

हाँ! जो हर तरह से मज़बूर हो जाए, उनकी बात अलग है, माँगने से स्वाभिमान पर आँच आती है, लोग दुत्कारते हैं, बुरा—भला कहते हैं, मगर जब वही आदमी अपने हाथों की जायज़ कमाई खाता है तो अल्लाह बहुत खुश होता है। ध्यान रहे कि इस्लाम जायज़ कमाई को ही बढ़ावा देता है और हराम कमाई से सख़्त नफ़रत करता है। क्योंकि हराम कमाई किसी का हक़ मार कर गैर क़ानूनी तरीक़े से कमाई होती है।

❖❖❖

''क्या ए०आई० टेक्नालोजी बता सकेगी... ''

इं0 जावेद इक़बाल

सृष्टि का रचयिता कौन?

० ईमान वालों के लिए यह सवाल कोई मानी नहीं रखता। कुरआन का इल्म रखने वालों के लिए यह कोई सवाल ही नहीं है क्योंकि वह बार—बार पढ़ते हैं, खालिके कायनात की मंसूबा बंद तखलीकात के बारे में, उसके हुक्मे कुन के बारे में, जैसे फरमाया गया है कि वही आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला है जब कोई काम करना चाहता है तो उसके लिए हुक्म देता है "कुन" यानी हो जा और वह हो जाता है। कुरआन पाक में यह कुन फयकून वाली बात कई जगहों पर कही गई है। कुरआन में ईमान वाला बन्दा पढ़ता है कि शुरू में जमीन व आसमान मिले हुए थे फिर उनको जुदा किया गया (21:30)। ज़मीन पर पहाड़ों को खूंटों की तरह जमाया गया (27:61)। सूरज चांद और दूसरे सय्यारों को काम पर लगाया गया, यह सब अपने अपने दायरे में तैर रहे हैं (21:33)। ईमान वाला बन्दा जानता है कि यह सब काम उस ख़ालिक़े कायनात ने छः दिन में पूरे किये (32:4—5)। यह छः दिन हमारे हिसाब वाले दिन नहीं हैं, खुद खालिके कायनात ने बता दिया कि हमारा एक दिन तुम्हारे हिसाब से एक हजार साल के बराबर होता है (22:47)। मगर दूसरी तरफ एक बड़ी तादाद उन लोगों की है जो खुदा की हस्ती के इंकार करने वाले, हठधर्म और अपनी अकल पर बड़ा नाज करने वाले हैं। उनके सामने हमेशा से यह सवाल उलझी हुई डोर की तरह खड़ा है कि यह कायनात कैसे वुजूद में आई? इस सवाल का जवाब तलाश करने की कोशिशें लगातार योरूप से अमेरिका और रूस तक में की जाती रही हैं मगर सवाल का जवाब उन्हें नहीं मिल रहा। उन्होंने कशिशे सिक़ल (गुरुत्वाकर्षण शक्ति *gravity*) को पहचाना, भाप की ताकत को जाना, हवा ही नहीं रोशनी की रफ़्तार तक को नाप लिया, आसमानों में राकेट दागे, चाँद सितारों और दीगर सय्यारों पर कमंदें डालीं, मगर इन सब को किसने बनाया, यह सवाल हल न हो सका। इंसान ने खुद अपने जिस्म पर नजर डाली, एक एक अंग को टटोला, हैरतों के पहाड़ टूटते रहे मगर यह राज उन हठधर्मियों पर न खुल सका कि इंसानी जिस्म की यह शानदार, खूबसूरत और पेचीदा इमारत किस तरह बनी और बनती ही चली जा रही है। आँख नाक कान दिल और दिमाग गरज यह कि जितना गौर व फिक्र किया उतने ही रहस्य खुलते चले गए और न खत्म होने वाला यह सिलसिला बढ़ता ही चला जा रहा है मगर हठधर्मियों पर यह राज नहीं खुल रहा कि आखिर जिस्म की इस शानदार इमारत को बनाने वाला कौन है। कुरआन से बैर है, उसकी बात मानें क्यों, हालांकि उसी की रौशनी में आगे बढ़ रहे हैं। नए नए अविष्कार कुरआन के पैगाम से प्रेणना लेकर ही जहूर में आए हैं और आ रहे हैं। जब कुरआन में पाया कि आरम्भ में ज़मीन व आसमान मिले हुए थे फिर हम ने उन्हें जुदा कर दिया (21:30) तो बिग बैंग की थ्योरी/नजरिया रच डाला, कहने लगे चौदह अरब साल पहले एक बड़ा आग का गोला था जो ज़बरदस्त धमाके के साथ फटा और उसके टुकड़े इधर उधर बिखर गए कोई चांद बना कोई सूरज, कोई मार्स बना कोई जुपिटर वगैरह, हमारी ज़मीन भी उसी धमाके के सबब वुजूद में आई। वाहरे इंसान की हठधर्मिता, थ्योरी रची कुरआन की रौशनी में मगर सेहरा बांधा अपने सर, ख़ालिक़े क़ायनात को न माना, कहता है चौदह अरब साल पहले यह बिग बैंग

की घटना हुई, साथ ही यह भी कहता है इस घटना के समय नापने का कोई पैमाना न था। फिर बताओ सौ पचास साल की उम्र वाले तुम लाचार व बेबस इंसान चौदह अरब साल कहां से नाप लाए।

गौर फरमायें अल्लाह तआला ने जब यह आयत उतारी थी (21:30), उस समय का इंसान इस बात को समझने की सलाहियत नहीं रखता था मगर आयत के शुरू में ही सवालिया अंदाज में कहा गया है "क्या काफिरों ने देखा नहीं"। उस ज़माने के काफिरों के देखने और समझने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। यह अंदाज़े बयान बता रहा है कि आने वाले ज़माने के काफिरों को चैलेंज किया गया है कि वे हमारी कारीगरी को देख रहे हैं मगर अपनी हठ के कारण मान नहीं रहे हैं।

इंसान ने कुरआन में बादलों की रचना के बारे में पाया पहले वह धीरे–धीरे चलते हैं फिर उनके बीच की दूरियां कम होती हैं, वह मिल जाते हैं और परत दर परत पहाड़ों की तरह ऊंचे हो जाते हैं (24:43)। इस बयान में भी एक चैलेंज था, क्या उन्होंने देखा नहीं? ज़मीन के पथरीले पहाड़ों की तरह बादलों के नर्म व नाजुक पहाड़ उस वक़्त के इंसान के देखने में कहां थे, समझ के बाहर थे, लिहाजा यह चैलेंज भी शायद आने वाले ज़माने के इंसानों के लिए ही था। मौजूदा जमाने के इंसान ने कुरआन के इस बयान पर गौर व फिक्र शुरू किया तो पाया कि खला (परिमण्डल में) 1600 फुट की ऊँचाई तक हवाओं का एक समन्दर समान है, इन हवाओं में अनेक तरह की गैसें हैं, उनके नीचे आने, ऊपर उठने और दिशा बदलने का बड़ा अजीब निजाम है, इन हवाओं की हलचल के नतीजे में बादल पहाड़ों का रूप अख़्तियार करते हैं। इन बादलों का निचला हिस्सा 15000 फुट की ऊँचाई पर होता है जबकि ऊपरी भाग 30000 फुट की ऊंचाई तक होता है। आजकल हवाई जहाज़ के सफर के दौरान यह मंज़र हर कोई देख रहा है। मगर अपनी आँखों से देख लेने के बावजूद अल्लाह की कुदरत को मानने से उन्हें इनकार है, और अपनी तहक़ीक़ पर नाज है। कोई पूछे तुम्हारी तहक़ीक़ कैसी, यह तो सृष्टि के रचयिता ने 1400 साल पहले ही बता दिया था।

और देखिए, इन हठधर्मियों ने जब कुरआन में हिसाब–किताब के दिन इंसानी जिस्म के अंगों, हाथ पैर वगैरह के बोलने का जिक्र पाया और दुनिया में किये गए सभी कामों को हू बहू दिखा दिये जाने का हाल पढ़ा तो आडियो और वीडियो ग्राफी का ख़्याल दिल व दिमाग में कौंदा, यह भी ख़ालिक़े क़ायनात की ही तरफ से था, उस मालिक को यही मंजूर था, उसकी मर्जी के बगैर तो पत्ता भी नहीं गिरता। लिहाजा उस खालिके कायनात ने अपनी कुदरत के राज उन जिज्ञासु (*Curious*) बंदों पर खोले और उनकी रहनुमाई फरमाई मगर यह घमंडी इंसान अपनी जिद के आगे रहनुमाई से फ़ायदा तो उठाते हैं मगर उस हक़ीक़ते खुदावंदी के आगे सर नहीं झुकाते, उसे पहचानने की कोशिश नहीं करते बल्कि यूं कहा जाए कि पहचान कर भी अनजान बने रहते हैं।

इंसान समझता है कि उसने भौतिक पदार्थों में एटम के निजाम को समझा और फिर उसे तोड़ कर मालीक्यूल्स की संरचना को जाना, उसने इंसान के जिस्म में खलियों (*cells*) के बनने और बिगड़ने के अमल को समझा, खून की अकसाम (*groups*) का पता लगाया फिर दिल व दिमाग की हरकतों को पहचाना और अब तो उसने मसनूई (*Artificial*) दिमाग भी तैयार कर लेने का दावा कर दिया है।

ख़ालिके क़ायनात ने इंसान को अपने खलीफा की हैसियत से जमीन पर उतारा है ,सो, अपनी तखलीक के राजों से वह मालिक अपने बंदों को दर्जा ब दर्जा आगाह करता रहा है। मौजूदा जमाने में इस आगाही की रफ़्तार बहुत तेज हो गई है, ऐसा लगता है वह रब्बे क़ायनात

भी जल्दी में है शायद इस लिए कि कारे जहां अपनी तकमील के आखिरी मरहले में है और हिसाब किताब की घड़ी नजदीक है, जब वह घड़ी आएगी तो हर एक को उसके करतूतों के वीडियो दिखा दिये जायेंगे।

सृष्टि के रहस्यों से पर्दा उठाते उठाते इंसान घमंड में इतना डूब गया कि वह खुद को ही खुदा समझने लगा। अब वह मोबाइल कम्प्यूटर, लैपटॉप आदि की दुनिया से गुजरते हुए ***(Artificial intelligence)*** मसनूई जेहानत) के द्वार में दाख़लि हो गया है। क्या इस मसनूई जेहानत के जरिए इंसान उन रहस्यों तक पहुँच सकेगा जो अब तक के तमातर साइंसी तजुर्बात के बावजूद उसके लिए मुअम्मा बने हुए हैं। वह इस क़ायनात के बनाने वाले को देखना चाहता है और रूह के बारे में भी जानना चाहता है, मगर यह दोनों चाहतें उसकी कभी पूरी होने वाली नहीं हैं। इंसान के दिल में हमेशा से रूह के बारे में जानने की बड़ी ख़्वाहिश रही है, रसूलुल्लाह सल्ल0 से भी रूह के बारे में सवाल किया गया था, मगर अल्लाह तआला ने यह कहकर मुंह बंद कर दिया कि रूह हमारे हुक्म से (बनी) है, इंसान को इस का इल्म नहीं दिया जाना क्योंकि तुम लोगों को बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है। (17:85) मतलब यह कि रूह की हकीकत को इंसान कभी नहीं समझ सकेगा। साफ जाहिर है कि इंसान को उतना ही इल्म मिलेगा जितना खालिके क़ायनात चाहेगा। मगर हठधर्म इंसान, ख़ुदा की हस्ती का इनकार करने वाला इंसान, ख़ालिक़ को देखने की जिद करने लगता है। हर क़ौम ने अपने नबी से इस ख़्वाहिश का इजहार किया था बल्कि हज़रत मूसा अलै0 ने तो खुद अल्लाह तआला से इस का इसरार किया था, मगर हल्की सी झलक थी कि बेहोश होकर गिर गये थे।

हक़ीक़त तो यह है कि *A.I.* भी इंसान की अक़्ल के जरिए ही वुजूद में आई है अलबत्ता ख़्याल इसका भी अल्लाह तआला ने ही इंसान के दिल में डाला और उसी ने रहनुमाई फरमाई। जब इंसान की अक़्ल तजुर्बात की रौशनी में आगे बढ़ने से रुक गई, क़ायनात में फैली हुई हज़ारों कहकशाओं और हर कहकशां में लाखों सय्यारों को देखते देखते निगाहें थक गईं, उन सय्यारों की दूरियां नापते नापते पैमाने जवाब दे गये और गिनते गिनते गिनतियां ख़त्म हो गईं तो खालिके कायनात ने इंसान को अपनी लाचारी और बेबसी का एहसास कराने के लिए *A.I.* को वुजूद बखशा *A.I.* के जरिए अब इंसान वह कर सकता है जो सिर्फ अपनी अकल के सहारे नहीं कर सकता। इंसान की सीमित सलाहितों से आगे के काम करने वाली यह *A.I.* तक़नीक, काम को अंजाम तक पहुंचा सकती है मगर उस काम से जुड़े जज़्बात को महसूस नहीं कर सकती। वह बीसियों लेख लिख सकती है, सैंकड़ों कवितायें रच सकती है मगर माँ—बाप की मुहब्बत को नहीं समझ सकती, महबूब से मिलने की तड़प को नहीं पा सकती। मालूम हुआ कि इंसान की बनाई हुई मख़लूक इंसान से बढ़कर काम तो कर सकती है मगर इंसान के दिल की धड़कनों से उसका कोई वास्ता नहीं। गोया कि मिट्टी से बने जिस्म को अशरफुल मख़लूकात का दर्जा देने वाली जो हस्सास चीज़ है, यानी रूह, वह *A.I.* में कहाँ?

होना तो यह चाहिए था कि इंसान अपनी बेबसी का एतराफ कर लेता और अपनी हठ छोड़ कर ***Big Bang*** के नज़रये को त्याग देता, ख़ालिक़े क़ायनात की हक़ीक़त को तस्लीम कर लेता, मगर उसे जिद है और कहता है कि "ऐसा क्यों नहीं होता कि हम खुद अपने परवरदिगार को (अगर वह है तो) देख लेते", हक़ीक़त यह है कि यह (हठधर्मी) अपने दिलों में खुद को बहुत बड़ा समझे हुए हैं। (25:21) वरना चमन में हर तरफ फैली हुई है दास्तां मेरी।

❖❖❖

निकाहः एक पाकीजा रिश्ता

मौलाना मु0 जौनुल हक़ नदवी

इस्लाम फितरत की आवाज़ है अल्लाह ने इसमें इंसान की मानसिकता की पूरी रियायत फरमाई है, अल्लाह ने हर मर्द और औरत के अंदर तबियत के तौर पर एक जिंसी जज़्बा और ख्वाहिश रखी है इस ख्वाहिश को पूरा करने के लिए एक हलाल तरीक़ा रखा है वह ''निकाह'' है।

हर इंसान के अन्दर ये ख्वाहिश होती है, इससे कोई भी अलग नहीं है चाहे नबी हो या वली हो, इल्म वाला हो या बगैर इल्म वाला हो शहर का रहने वाला हो या देहात का हर इंसान के अन्दर ये चाहत होती है अल्लाह पाक कुरआन शरीफ़ में फरमाता है हमने आपसे पहले भी नबी भेजे और हमने उनको बीवियां दीं और औलाद भी। निकाह नबियों की सुन्नत है मन की चाह को पूरा करने का बेहतर और आसान तरीक़ा है। नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया, ''ये निकाह मेरी सुन्नत है यानी ये सिर्फ इंसान की ख्वाहिश को पूरा करने का जरिया ही नहीं बल्कि सवाब को पाने का तरीका भी है, अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी (रह0) ने हर तरह की रिश्तेदारियों की बुनियाद निकाह को बताया है ये ना होता तो दुनिया का कोई रिश्ता पैदा ना हो सकता इसलिए दुनिया की हर रिश्तेदारी का ताल्लुक इसी की वजह से वजूद में आया है, इस नज़रिये से भी दुनिया में निकाह की अहमियत बहुत ज़्यादा है कि इसी से सारी दुनिया के अन्दर प्यार मुहब्बत की शुरुआत होती है। पैग़म्बरे इस्लाम ने फरमाया ''ऐ नवजवानों की जमात! तुम में से जो आदमी औरत के संबंधों को पूरा करने की ताकत रखता हो उस को निकाह कर लेना चाहिए क्योंकि निकाह करना बुरी निगाह से बहुत बचाता है और शर्म गाह को बहुत महफूज़ रखता है और जो आदमी उस की ताकत न रखता हो उस को चाहिए कि रोजा रखे क्योंकि रोजा रखना उसके लिए फायदे मंद है, तबियत और नफसानी तौर पर मियां और बीवी के दरमियान बहुत ज़्यादा मुहब्बत और हमदर्दी रखी गई है जैसा कि माँ—बाप को औलाद से और औलाद को माँ—बाप से फितरत और तबियत के तौर पर बहुत ज्यादा मुहब्बत और ताल्लुक़ होता है, आयते करीमा में साफ जिक्र किया गया है कि अल्लाह ने मियां—बीवी के दिलों में मुहब्बत और रहमत भर दी है कि जो दो लोग निकाह से पहले अजनबी थे अब उनमें निकाह के बाद ऐसी मुहब्बत हो जाती है कि दूसरे ताल्लुक़ात में उसकी मिसाल नहीं मिल सकती हुजूर सल्ल0 ने फरमाया ऐ आदमी तूने निकाह की तरह ऐसी कोई चीज नहीं देखी होगी जो दो मुहब्बत करने वालों के बीच मुहब्बत को ज़्यादा करे यानी अल्लाह की तरफ़ से मियाँ बीवी के रिश्ते में मुहब्बत और ताल्लुक़ बेहद और बे पनाह होता है।

यही वजह है कि शौहर बीवी को और बीवी शौहर को पूरी सहूलत और आपस में आराम पहुंचाते हैं, और यह सुकून क़रार आपसी मुहब्बत और प्यार उन्हीं मियाँ—बीवी को हासिल होता है जो इस्लामी तरीक़े के मुताबिक क़ायम हुआ हो इस्लाम उन्हीं को ज़ोज (जोड़ा) मानता है गैर इस्लामी और गैर क़ानूनी जोड़ों को वह जोड़ा ही नहीं मानता बल्कि उन्हें व्यभिचारी और पापी कहता है। दरअसल, इस्लामी तालीम

के ख़िलाफ़ तरीक़े को अपनाना और उसके अलावा किसी भी रूप में ऐसा रिश्ता क़ायम करना अपराध है।

जो लोग इस (इस्लामी तरीके) के सिवा चाहें, वही हद से पार जाने वाले हैं। इस्लाम ने ऐसे लोगों के लिए और ऐसे माहौल को बढ़ावा देने वालों के लिए सख़्त सजा का प्रस्ताव रखा है। ''जो लोग मुसलमानों में बेहयाई फैलाने की चाह रखते हैं, उनके लिए दुनिया और आखिरत में दर्दनाक अजाब है।'' (अन–नूरः 19)

अगर कोई इंसान ऊपर बताऐ गये हलाल तरीके को नज़रअंदाज़ करेगा तो ज़रूर उसकी फितरत गलत, हराम और नाजायज़ रास्ते तालाश करेगी जैसा कि आज के दौर में हया को मिटाने वाली पश्चिमी और यूरोपीय कल्चर के मानने वाले गुनाह का काम बहुत ज़्यादा और बेख़ौफ़ होकर कर रहे हैं ये इंटरनेट और नई तकनीक की मदद से बे शर्मी और बत्तमीजी को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दे रहे हैं। उनके नज़दीक *"Shyness is sickness"* है, गोया उनके अनुसार शर्म व हया के बिलकुल उल्टा जो जितना बेशर्म होगा उतना ही वह सेहतमंद होगा। बे–हयाई के लिए कुछ दिनों *(Valentine's Day, Rose Day)* वगैरह को खास कर लिया गया है। बे–शर्मी को एक *Culture* की सूरत दे दी गई है और वहीं, अनगिनत चीज़ों को एक खास दिन में समेट दिया गया है।

इन अपराधियों के सामाजिक निजाम को अगर किसी परखने वाले के हवाले से देखा जाए तो यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि उनकी जिंदगी में बेचौनी की स्थिति ज़्यादा है। *"Live in Relationship"* आदि जैसे सिस्टम की दर में हर साल इजाफा हो रहा है। नतीजतन, बुढ़ापे में जब की मदद, सहयोग और हमदर्दी की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है लेकिन इन दिनों लाचारगी की ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर लोगों की संख्या भी दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस पहलू से पश्चिमी मुल्कों के समाज का सामाजिक निजाम बयान से बाहर बल्कि शर्म के लाइक है।

नबियों की बातों में से जो लोगों तक पहुँची यह भी है ''कि जब तुझमें शर्म न रहे, तो जो चाहे कर।''

बगैर किसी शक के तमाम नबी शर्म व हया की तालीम देने आए थे। जो कौमें (यहूदी और ईसाई) अल्लाह के पैगम्बरों से अपना रिश्ता जोड़ने का दावा करती हैं, और साथ ही बेशर्म, बेहया और अखलाक से महरूम भी हैं वे अपने इस दावे में कितनी झूठी हैं, और अपनी बदकिरदारी के कारण उन नबियों की जात–ए–गिरामी के लिए शर्म नाक हैं।

यह इंतिहाई गौर करने की बात है कि जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को मानने वाले और उनसे खूब प्रेम करने वाले हैं, वो भी यूरोप और पश्चिम के तरीके को अपना रहें हैं और उनकी तहरीरों और लेखों से प्रभावित होकर हैवानियत को पसंद करने वाले बनते जा रहे हैं।

जबकि ज़रूरत इस बात की है कि हममें से हर मुसलमान अपनी सूरत–ए–हाल और अपने घर के माहौल खासतौर से नई नस्ल को सही रखे और नाफरमानों की नक़ल करने और उनके तरीक़े को अपनाने से पूरी तरह होशियार रहे, इधर उधर भटकने से बचे, मन की इच्छा का जो बेहतर और पाकीज़ा तरीक़ा (निकाह) है सिर्फ उसी को अपनाए, यक़ीनन इसी में ज़िंदगी का मज़ा है और आपस में प्यार व मोहब्बत का खूबसूरत मौक़ा है।

❖❖❖

मूर्खता का समर्थन क्यों?

गुलज़ार सहराई

इस्लाम विरोधियों की ओर से वर्षों से मुसलमानों पर यह मिथ्यारोपण किया जाता रहा है कि इस्लाम तलवार के बल पर फैला। वे यह झूठ फैलाते हैं कि मुस्लिम बादशाहों ने अपने सत्ताधिकार और शक्ति का प्रयोग कर गैर–मुस्लिमों, विशेष कर भारत के हिन्दुओं को, जबरन ''कलिमा'' पढ़ने और मुसलमान बनने पर मजबूर किया। झूठ की इन्तिहा यहां तक कर दी कि औरंगजेब के बारे में यह प्रोपेगंडा फैला दिया गया कि वह जब तक सवा मन जनेऊ न जलवा लेता, खाना न खाता था। सोचने की बात यह है कि कुछ धागों से बने जनेऊ का वजन ही कितना होता है, और फिर सवा मन जनेऊ का मतलब तो अरबों–खरबों लोग बनेंगे जाकर, जबकि जनेऊ केवल ब्राह्मण धारण करते हैं। यानी एक बार के खाने से पहले अरबों–खरबों ब्राह्मणों का धर्म परिवर्तन! क्या यह बात बुद्धि और अनुभवों पर फिट बैठती है? बहरहाल, हम इस बहस को यहीं छोड़ते हैं, क्योंकि इस प्रोपेगंडे के खंडन में इससे पहले भी मुस्लिम विद्वान और इतिहासकार सच सामने लाते रहे हैं, जिसमें से एक कड़वा सच यह है कि भारत में इस्लाम सूफियों की शिक्षाओं से फैला या फिर इसका कारण हिन्दू समाज में व्याप्त वर्ण– व्यवस्था का चलन था। अपने समाज के इस दोष को छिपाने के लिए मुसलमानों पर धर्म परिवर्तन के आरोप लगाए गए और इस्लाम और मुस्लिम विरोधी प्रोपेगंडे का यह सिलसिला आज तक जारी है, जिसमें अच्छे–खासे ''सद्बुद्धि'' रखने के दावेदार भी ग्रस्त नज़र आते हैं।

सबसे पहले तो हम कुरआन का ही यह आदेश सामने रखते हैं जिससे मालूम होता है कि इस्लाम न केवल धर्म परिवर्तन का समर्थन नहीं करता, बल्कि वह तो इसका विरोध करता है। कुरआन में कहा गया है– ***''धर्म में कोई जबरदस्ती नहीं है। सही रास्ता गलत से अलग हो गया है। तो जो व्यक्ति तागूत को नकार दे और अल्लाह पर ईमान लाए, उसने सबसे भरोसेमंद सहारा पकड़ लिया है। वह कभी नहीं टूटेगा। और अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।''***

(सूरा–2, आयत–256)

कुरआन की यह आयत स्पष्ट कर देती है कि इस्लाम अपनी दावत और सन्देश के सम्बन्ध में किसी जोर–जबरदस्ती का समर्थक बिल्कुल नहीं है। वह तार्किक रूप से अपनी बात रखता है, जिसे चाहे मानना है, वह माने, जिसे नहीं मानना है, उस पर कोई जोर नहीं। कुरआन की उक्त आयत के आखिर में यह कहकर कि, ''अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है'' यह बता दिया गया कि वह दिलों का हाल तक जानता है। इसलिए अगर किसी से जोर–जबरदस्ती की गई तो उसका यह इस्लाम स्वीकार्य करना अल्लाह के निकट मान्य न होगा।

यहां यह भी याद रहे कि इस्लाम दिखावे को पसन्द नहीं करता और जो व्यक्ति खुद को मुसलमान जाहिर करने के लिए मात्र दिखावे हेतु कलिमा पढ़ भी ले, परन्तु दिल से वह इस्लाम को स्वीकार न करता हो, उसे इस्लामिक परिभाषा में ''मुनाफिक'' अर्थात मिथ्याचारी कहा गया है और अल्लाह के निकट उन्हें ईमान वाला स्वीकार नहीं किया जाता। जाहिर है ऐसे दिखावटी मुसलमानों की न इस्लाम को ज़रूरत है, न सच्चे मुसलमानों

को, फिर वे किसी से ज़बरदस्ती कलिमा पढ़ा कर मात्र संख्या बढ़ाने के लिए अपने समाज में ''मुनाफिकों को शामिल क्यों'' करेंगे?

कुरआन की यह बात इतनी स्पष्ट है कि इसे समझने में किसी को दिक्कत नहीं होनी चाहिए। कम से कम मुसलमान तो इसे बखूबी समझते हैं। इसलिए वे ऐसी मूर्खता कभी नहीं करते कि किसी को जबरन इस्लाम स्वीकार करने पर मजबूर करें और अपने समाज में दिखावटी मुसलमानों यानी मुनाफिकों की संख्या बढ़ा लें। हां, उन लोगों को यह समझने में दिक्कत ज़रूर आती है, जिनके समाज के कुछ शरारती तत्व मुसलमानों को पकड़ कर उनसे जबरन ''जय श्रीराम'' के नारे लगवाते हैं और समझते हैं कि ऐसा करके उन्होंने बहुत बड़ा तीर मार लिया। ऐसे लोग यदि यह समझते हैं कि किसी से जबरन कुछ शब्द कहलवा लेने से उसका धर्म बदल जाएगा, तो हो सकता है कि यह उनके निकट सही भी हो, मगर इस्लाम ऐसी मूर्खता का कभी समर्थन नहीं कर सकता, इसलिए कि इस्लाम के निकट धर्म केवल कुछ शब्दों के उच्चारण का नाम नहीं है, बल्कि इस्लाम एक पूरी विचारधारा और फिर उस विचारधारा पर आधारित एक सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था का नाम है।

यह सर्वमान्य और सर्वविदित है कि विचारों का सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है। आप किसी को पकड़ कर जोर– जबरदस्ती उससे अपने मनचाहे शब्द बुलवा सकते हैं, और हो सकता है कि वह अपनी जान के खौफ से आपके बताए शब्द बोल भी दे, मगर आप उसके दिल–दिमाग पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते, उसे अपना समविचार नहीं बना सकते, न अपने आराध्यों के प्रति उसके मन में आस्था एवं श्रद्धाभाव पैदा कर सकते हैं, आप कितना भी जोर लगा लें। वह भले ही वक़्ती तौर पर आपकी बात मान ले, लेकिन वह दिल ही दिल में आपको बुरा कहता रहेगा, और जैसे ही उसे मौका मिलेगा, वह तौबा करेगा, अपने रब से माफी मांगेगा और पुनः अपने धर्म में वापस पलट जाएगा।

अलबत्ता ''***अगर आपके पास अपनी बात के पक्ष में तर्क हैं तो आप उन तर्कों से सामने वाले की विचारों में बदलाव जरूर ला सकते हैं, या कम से कम उसे सोचने पर मजबूर कर सकते हैं। इसके सिवा कोई रास्ता नहीं है किसी के विचारों में बदलाव लाने का।***''

कोई भी ऐसा धर्म जो केवल मनुष्यों की बनाई हुई संस्कृति पर निर्भर न हो, बल्कि उसका सम्बन्ध सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता ईश्वर से हो, वह अपने प्रचार के लिए कभी जोर–जबरदस्ती का सहारा नहीं ले सकता। जो लोग इस्लाम पर यह मिथ्यारोप लगाते हैं, वे या तो धर्म के प्रति गंभीर नहीं होते, या धर्म को केवल कपड़ों जैसी कोई चीज समझते हैं, कम से कम सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञाता ईश्वर प्रदत्त विचारधारा और जीवन प्रणाली तो बिल्कुल नहीं मानते। ऐसे लोगों के बारे में यही कहा जाएगा कि उनका किसी ईश्वर, किसी धर्म से कोई लेना–देना नहीं होता, चुनांचे उनके शरारती तत्व केवल अपने अहंकार की संतुष्टि के लिए अपनी संस्कृति को बलपूर्वक लोगों पर थोपना चाहते हैं और इस मानसिकता से ग्रस्त लोग इस्लाम को भी ऐसी ही कोई संस्कृति समझते हैं और समझने पर अड़े रहते हैं।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी

इस्लामी अक़ीदे और ईमानियात से संबंधित प्रश्नों के उत्तर

तौहीद का अकीदा

प्रश्न: तौहीद से क्या मुराद है?

उत्तर: तौहीद से मुराद है दिल से सिर्फ अल्लाह तआला को माबूद मानना, जबान से उसकी वहदानियत (एक होने) का इकरार करना और उसकी तमाम सिफात पर ईमान लाना।

प्रश्न: कलिम—ए—तय्यबा क्या है और उसके मानी क्या हैं?

उत्तर: कलिम—ए—तय्यबा ''ला—इलाह इल्लल्लाह मुहम्म—दुर्रसूलुल्लाह'' है। इसके मानी हैं कि ''अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्ललाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।''

प्रश्न: इस्लाम के बुनियादी अक़ीदे क्या हैं?

उत्तर: इस्लाम के बुनियादी अक़ीदे सात हैं:

(1) अल्लाह तआला की हस्ती पर ईमान लाना कि वह अकेला है और उसकी जात व सिफात में कोई उसका शरीक़ नहीं।

(2) अल्लाह के रसूलों पर ईमान और यह कि उनमें आख़िरी रसूल हजरत मुहम्मद (सल्ल0) हैं।

(3) तमाम आसमानी किताबों पर ईमान, जिनमें आख़िरी किताब कुरआन मजीद है।

(4) क़यामत के दिन पर ईमान। यानी हमें इस जिन्दगी के आमाल का हिसाब देना है।

(5) अल्लाह तआला के फरिश्तों पर ईमान।

(6) अच्छी और बुरी तकदीर पर ईमान।

(7) मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा उठाए जाने पर ईमान।

प्रश्न: दीन के दो बुनियादी स्रोत क्या हैं?

उत्तर: एक अल्लाह की किताब कुरआन मजीद और दूसरा अल्लाह के नबी (सल्ल0) की सुन्नत।

प्रश्न: मुसलमान को अपने आमाल के बारे में क्या अकीदा रखना चाहिए?

उत्तर: हर मुसलमान को कोई भी अमल करने से पहले ये सोचना चाहिए कि खुदा हमको देख रहा है और फरिश्ते (किरामन कातिबीन) उसको रिकॉर्ड कर रहे हैं। उसके अच्छे बुरे आमाल के लिहाज से क़यामत के दिन उसको इनाम या अज़ाब मिलेगा।

प्रश्न: क्या हालते—नजाअ (रूह निकलते वक़्त) में तौबा और ईमान कबूल हो सकता है?

उत्तर: हरगिज नहीं! अल्लाह तआला के नजदीक आख़िरी वक़्त में ईमान लाने की कोई क़ीमत और हैसियत नहीं है।

प्रश्न: फरिश्तों के बारे में हमारा क्या अकीदा होना चाहिए?

उत्तर: फरिश्तों के बारे में हमारा अकीदा होना चाहिए कि वे अल्लाह तआला की एक पाक और बरगुजीदा मखलूक हैं, गुनाहों से पाक हैं, उनकी फितरत ही ऐसी है कि वे अल्लाह के अहकाम की नाफरमानी नहीं कर सकते न उनसे कोई भूल चूक होती है और न वे अपनी मरजी से अल्लाह के किसी भी हुक्म में कुछ कमी—बेशी कर सकते हैं। विभिन्न कामों पर लगाए गए हैं जिन्हें वे अन्जाम दे रहे हैं।

प्रश्न: फरिश्तों में सबसे ज़्यादा बुजुर्ग और अल्लाह का पसन्दीदा फरिश्ता कौन है?

उत्तर: हज़रत जिब्रील अलै0। उनके जरीए अल्लाह तआ़ला ने अपना पैग़ाम अपने रसूलों तक पहुँचाया।

नुबुव्वत व रिसालत

प्रश्नः वही की हक़ीक़त क्या है?

उत्तरः वही तालीम का वह तरीका है जिसके जरीए अल्लाह तआला अपने नबियों को अहकाम देते थे।

प्रश्नः दुनिया में नबियों के आने का सिलसिला कब से शुरू हुआ? और कब ख़त्म हुआ?

उत्तरः दुनिया में नबियों के आने का सिलसिला सबसे पहले इन्सान यानी हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) से शुरू हुआ जो अल्लाह के पहले रसूल भी थे और प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) पर ख़त्म हो गया।

प्रश्नः दुनिया में कितने नबी (अलै0) तशरीफ लाए?

उत्तरः मुख़्तालिफ रिवायतों के मुताबिक नबियों की तादाद लगभग एक लाख चौबीस हज़ार (1,24,000) है।

प्रश्नः रसूल और नबी कौन लोग होते हैं?

उत्तरः रसूल और नबी अल्लाह के चुने हुए बन्दे और इन्सान होते हैं। अल्लाह तआ़ाला अपने अहकाम बन्दों तक पहुँचाने के लिए उनको मुकर्रर करता है। वे बड़े सच्चे और इन्सानों में सबसे अफजल होते हैं।

प्रश्नः चार मशहूर आसमानी किताबों और जिन पैगम्बरों पर वे नाजिल हुईं उनके नाम क्या हैं?

उत्तरः (1) तौरेत, हज़रत मूसा (अलै0) पर (2) जबूर, हज़रत दाऊद (अलै0) पर (3) इन्जील, हज़रत ईसा (अलै0) पर (4) कुरआन मजीद, हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) पर।

प्रश्नः नुबुव्वत के बारे में खुद नबी (सल्ल0) ने क्या ऐलान फरमाया था?

उत्तरः नबी (सल्ल0) ने फरमाया था कि ''मैं आखिरी नबी हूँ। मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा।''

प्रश्नः अल्लाह के रसूल (सल्ल0) के बारे में मुसलमानों को क्या अक़ीदा रखना चाहिए?

उत्तरः रसूल (सल्ल0) के बारे में मुसलमानों को अक़ीदा रखना चाहिए कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के बन्दे और उसके आखिरी रसूल हैं, अब क़यामत तक कोई नबी नहीं आएगा। जो शरीअत आप (सल्ल0) लेकर आए वह बरहक़ है और यही अस्ल दीन है।

प्रश्नः क्या सभी नबियों पर ईमान लाना ज़रूरी है?

उत्तरः जी हाँ, तमाम नबियों पर ईमान लाना ज़रूरी है।

प्रश्नः दुनिया में अल्लाह तआला ने नबियों को किस मक्सद के लिए भेजा ?

उत्तरः लोगों को सीधा रास्ता दिखाने और अल्लाह के अहकाम तमाम इन्सानों तक पहुँचाने के लिए।

प्रश्नः क्या कोई शख़्स अपनी कोशिश और इबादत व रियाजत से नुबुव्वत का दर्जा हासिल कर सकता है?

उत्तरः हरगिज नहीं, नुबूव्वत का दर्जा अल्लाह तआला के अता करने ही से हासिल होता है। आदमी के इरादे और कोशिश को उसमें कुछ भी दखल नहीं। वैसे भी नुबुव्वत का सिलसिला अब खत्म हो चुका है।

❖❖❖

अनुरोध

हम अपने पाठकों की दीनी मालूमात और धार्मिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए ''कुरआन की शिक्षा'' और ''प्यारे नबी की प्यारी बातें'' जैसे लेख निरंतर प्रकाशित करते हैं। उनका सम्मान हमारा और आपका कर्तव्य है। इसलिए जिन पन्नों पर आयतों और हदीसों के अनुवाद लिखे हैं, उनका एहतिराम हमारी दीनी जिम्मेदारी है इसका ख़्याल रखें, इंशाअल्लाह हम सवाब के मुस्तहिक़ एवं पात्र होंगे।

(इदारा)

मालदार कौन?

मायल ख़ैराबादी

एक आदमी था। उसके दो हाथ थे, दो पैर थे, दो आँखें थीं, दो कान थे, अच्छा खासा डील डौल था।

ही, ही, ही.. ! आज भाई जान ने इस तरह कहानी शुरू की तो हम सब ही—ही—ही करके हँसने लगे। रज्जो आपा बोलीं! ये कैसी कहानी—हाथ, पैर, आँखें और कान तो आदमी के होते ही हैं।''

यही सोच कर तो हम सब भी हँस रहे थे। भाई जान ने हमें देखा। वह खुद भी हँसने लगे फिर बोले—कहानी तो सुनो बड़ी मजेदार है।

''अच्छा भाई! सुनाइये।''

''अच्छा सुनिये, वह जवान आदमी काम धाम तो करता न था। शाम को जामा मस्जिद के दरवाजे पर खड़ा हो जाता और भीख माँगा करता था।

''भाई जान आप उसे जानते थे क्या? सईद ने पूछा।''

''जानता तो न था मगर जान गया''

''वह कैसे? सईद ने फिर पूछा।

ऐसे कि एक दिन मैं मगरिब की नमाज़ पढ़कर जामा मस्जिद से निकल रहा था। मैंने देखा कि सामने एक कार आकर रुकी। वह कार की तरफ दौड़ा कार में एक आदमी था। वह रईस मालूम होता था। किसी काम के लिए उसने बाहर झांका तो जवान भिखारी ने उसके आगे हाथ फैला दिये। रईस ने एक नजर उसे देखा फिर बोला, ''शर्म नहीं आती। ये जवानी ये डील डौल और भीख माँग रहे हो।''

हुजूर! गरीब आदमी हूँ। खुदा के नाम पर कुछ दे दीजिये।''

''तुम गरीब हो, अल्लाह ने दो हाथ दिये, दो पैर दिये आँखें और कान दिये और ये गठा हुआ बदन दिया फिर भी अपने को गरीब बताते हो। तुम तो जो चाहो कर सकते हो। मुझे देखो, गरीब तो मैं हूँ। ये कह कर इस रईस ने अपना लूला हाथ और लंगडी टांग दिखाई और कहा कि इसकी एक आँख नकली लगी है फिर कहने लगा।

''दस हज़ार रुपये ले लो। अपनी एक टाँग दे दो, जवान भिखारी चुप खड़ा का खड़ा रह गया। मैं भी कार के पास पहुँचा और उनकी बातें सुनने लगा।

''अरे वाह! शौकत बाजी को मज़ा आने लगा। बोली, ''अरे वाह फिर तो भिखारी कुछ भी जवाब न दे सका होगा।

''जवाब क्या देता— रईस ने फिर कहा अच्छा बीस हजार ले लो और अपना एक हाथ मुझे दे दो।''

''वाह भाई वाह'' रज्जो आपा कहने लगीं— अब तो वह नौजवान कुछ भी न बोल सका होगा।

''हाँ सुनो तो इससे रईस ने फिर कहा— ''अच्छा तो चालीस हज़ार रुपये ले लो अपनी एक आँख मुझे दे दो।

भिखारी चुप खड़ा था। उससे कोई जवाब बन नहीं पड़ रहा था। उसने गर्दन झुका ली। रईस ने कहा— ''अच्छा ले ये एक रुपया ले लेकिन याद रख खुदा जिसे जलील करना चाहता है उससे भीख मंगवाता है।'' ये बात प्यारे रसूल (सल्ल०) ने फरमायी है अब तू जाने या तेरा ईमान।''

''तो फिर उसने रुपया ले लिया? मैंने भाई जान से पूछा, भाई जान ने कहा— ''नहीं उसने रुपया नहीं लिया। वह चुपचाप एक तरफ चला गया।''

''अरे वाह! खूब फिर तो उसने भीख मांगने से तौबा ही कर ली होगी। है न! है न भाई जान!

''हाँ सचमुच उसने फिर भीख नहीं माँगी।''

आपको कैसे मालूम हुआ? रज्जो आपा ने सवाल किया। भाई साहब ने बताया कि एक दिन मैं दफ़्तर जा रहा था। रास्ते में एक नया मकान बन रहा था मैने देखा कि वही जवान वहां ईंटे उठा रहा था। मैं उसके पास गया, उसने मुझे देखा, मैंने उसे देखा, हम दोनों मुस्कुराये।

''हाँ मुस्कुराये तो होंगे आप दोनों।''

''फिर आपस में सलाम अलैयक हुई।'' मैंने पूछा।

''क्यों भाई कितने की मजदूरी कर लेते हो?''

बोला, मैं मजदूरी नहीं करता। ठेके पर काम करता हूँ। एक एक दिन में चार चार पाँच पाँच हजार चौके उठा कर अन्दर चट्टा लगा देता हूँ। तीस चालीस रुपये रोज के लेता हूँ। अल्लाह का शुक्र है कि उसने मुझे तन्दरुस्त बनाया। अब मैं अपने आपको गरीब नहीं समझता। मुझे अल्लाह तआला ने बड़ा मालदार बनाया है। मुझे हट्टा कट्टा तन्दरुस्त बदन क्या दिया। समझिये कि बहुत बड़ी दौलत है ये। पहले मैंने इसकी कद्र नहीं की उस दिन तो आप वहाँ मौजूद थे। उस लंगडे रईस ने मेरी आँखें खोल दी।

''ऐ तुम सब चुप क्यों हो? कहानी कहते कहते भाई जान ने हमसे पूछा।

हम सचमुच चुप थे और चुप ही रहे। भाई जान कहने लगे–

''अच्छा तुम्हें ताज्जुब हो रहा है। अच्छा लो और ज़्यादा ताज्जुब करो या फिर नसीहत हासिल करो।

वह जो मेरे दोस्त अहमद यार खाँ साहब हैं न। हामिद मियाँ तुम तो एक दिन मेरे साथ उनके महल में गये थे। कैसे अच्छा बना है उनका महल वही तो था, वह जवान भिखारी, जिनका हाल मैंने तुम्हें सुनाया।

अरे वाह! अहमद यार खाँ साहब! हम सब हक्का बक्का होकर रह गये। और फिर अपने हाथ पैर देखने लगे। हमें ऐसा मालूम हो रहा था जैसे हमारे सारे बदन में एक ताक़त भर गयी है। भाई जान मुस्कुराये और अपने काम में लग गये।

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० एक आदर्शीय शासक

मुहम्मद इक़बाल नदवी

इस्लामी इतिहास में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० का नाम न्याय, सत्य, समानता के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। आप दूसरे ख़लीफ़ा हैं आपने दस वर्ष छः साल शासन किया जिसका उदाहरण इतिहास के पन्नों में नहीं मिलता है। पहली बार आपने शासक और प्रजा के बीच पूर्ण समानता की सर्वोच्चता क़ायम की। दुनिया के अनेकों महान विद्वानों ने उनके न्यायप्रियता की प्रशंसा की, क्योंकि न्याय सभ्यता और समाज की नीव होता है। जब शासक खुद को भी क़ानून के अधीन मानता है तभी समाज में वास्तविक शांति और खुशी प्राप्त होती है। हज़रत उमर रज़ि० के न्याय ने समाज में ऐसा परिवर्तन किया कि क्या मुस्लिम और क्या गैर मुस्लिम सब अपने अपने जीवन पर प्रसन्न थे क्योंकि उनके अन्दर हज़रत उमर के न्याय की ऐसी भावना उत्पन्न हो गई थी जिसके प्रति वह स्वतंत्रता के साथ सामाजिक व्यावहार करते थे कोई उनपर अत्याचार नहीं कर सकता था क्योंकि उनके बीच बराबरी, ज़िम्मेदारी सामाजिक न्याय की ऐसी शमा जल रही थी जिसके प्रकाश से सभी लोग फ़ायदा उठा रहे थे।

उनके न्याय और इंसाफ़ के कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करते हैं जिससे उनके शासन काल को समझना बहुत आसान और सरल हो जायेगा।

धर्म और पद से ऊपर न्यायः—

मिस्र के गवर्नर अम्र बिन आस रज़ि० के बेटे ने एक ईसाई युवक को अनावश्यक मारा जिसकी शिकायत उसने हज़रत उमर से की आपने दोनों को मदीना बुलवाया और गवर्नर के बेटे को कटघरे में खड़ा करके उस किब्ती युवक से कहा कि इस गर्वनर के पुत्र को उसी प्रकार मार लगाओ जिस तरह उसने मारा था। और इस ऐतिहासिक अवसर पर आपने कहाः कि तुम लोगों को कब से गुलाम बनाने लगे हो, जबकि उनकी माताओं ने उन्हें आज़ाद पैदा किया इससे प्रमाणित होता है कि उनके शासनकाल में गैर मुस्लिम भी पूरी तरह सुरक्षित थे।

अदालत में ख़लीफ़ा (शासक) एक सामान्य नागरिक की तरह हैः—

एक व्यक्ति ने शिकायत की कि उमर ने उनका ऊँट ले लिया है। मामला क़ाज़ी ज़ैद बिन साबित की अदालत में पहुँचा, अदालत ने उमर रज़ि० को एक सामान्य नागरिक की तरह बैठाया। क़ाज़ी साहब ने उन्हें अमीरूल मोमिनीन कह कर सम्बोधित किया तो उन्होंने तुरन्त रोका और ऐतिहासिक वाक्य कहाः यह अन्याय की शुरुआत है कि एक पक्ष को पद के कारण सम्मान दिया जाए यह घटना उनके न्याय की समानता और सिद्धान्त को स्पष्ट करती है।

भूखे बच्चों की सहायता शासक की ज़िम्मेदारी का सर्वोच्च उदाहरणः—

अंधेरी रात में गश्त करने के दौरान उन्होंने एक तम्बू से कुछ बच्चों के रोने और बिलखने की आवाज़ सुनी पता करने पर उनकी माँ ने बताया कि खाने की कोई चीज़ न होने के कारण वह खाली देगची को चूलहे पर चढ़ा कर भूखे बच्चों को बहला रही है। यह सुनकर वह तुरन्त बैतुलमाल (राजकोष) गये और वहाँ से राशन वाली बोरी साथ उठा कर अपने कन्धों पर लाद कर ले गये और उन बच्चों के लिए स्वयं भोजन तैयार करके उस औरत और उसके बच्चों को खिलाया क्योंकि हज़रत उमर रज़ि० एक आदर्शीय शासक होने के साथ साथ एक अच्छे नागरिक और जनता के सेवक भी थे।

गैर मुस्लिम नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षाः—

हज़रत उमर रज़ि० गैर मुस्लिम नागरिकों (जिम्मी) के अधिकारों पर बहुत ध्यान देते थे। वह कहा करते थे उनकी जान माल और धर्म की सुरक्षा हमारे जिम्मे है यदि कोई मुसलमान किसी ग़ैर मुस्लिम पर अत्याचार

करता तो उस पर तत्काल कठोर कारवाई की जाती उनके इस सिद्धान्त ने सम्पूर्ण शासन में सामाजिक बराबरी को स्थापित किया।

सामाजिक सम्पत्ति में पूर्ण पारदर्शिताः—

उन्होंने अपने गवर्नरों को कभी भी वैभव और विलासिता का जीवन नहीं जीने दिया एक बार एक गवर्नर को बहुत अच्छे कपड़े पहने देखा तो उनसे पूछताछ की और जब सत्य स्पष्ट हो गया तब उनको मॉफ किया। इससे उनके शासन—प्रशासन में ईमानदारी और पादर्शिता सुनिश्चित होती है। हज़रत उमर फारूक़ रज़ि0 के न्याय को देख कर स्वयं गैर मुस्लिम इतिहासकारों ने कहा है कि अगर दुनिया को आदर्श शासन चाहिए तो उमर जैसा शासक चाहिए।

महात्मा गाँधी ने जब भारत में काँग्रेस की सरकार बनी तो कहा था कि हमारे मंत्रियों को अबू बक्र और उमर की जीवनी का अध्ययन करना चाहिए कि किस प्रकार उन्होंने एक उच्च आदर्शीय शासन की बुनियाद डाली थी। इन तमाम बातों से आप कल्पना कीजिए कि हज़रत उमर रज़ि0 का शासन इस बात की जीवंत मिसाल है कि जब न्याय को सर्वोच्च स्थान दे दिया जाए तो समाज शांति, सुख, सुरक्षा और समृद्धि से भर जाता है। आज के इस युग में भी उनका शासकीय माडल सुशासन का मार्गदर्शीय है।

❖❖❖

किताबों से दोस्ती

आज के हालात में इंसान की तरक्की कामयाबी और इज़्ज़त का राज़ इल्म है। लेकिन ऐसा इल्म जो खुद को और समाज को भी समझ और अच्छाई की बुनियाद पर खड़ा करे। हर शख़्स को उस इल्म की ज़रूरत है जो इंसान को अज्ञानता और अंधकार से निकालकर रौशनी की तरफ ले जाए। और इल्म हासिल करने का सबसे अच्छा जरिया किताबें हैं।

किताब इंसान की सबसे अच्छी, सच्ची और खामोश दोस्त होती है। किताबें इंसान को सोचने, समझने और अच्छा बनने की राह दिखाती हैं। एक अच्छा इंसान बनने के लिए किताबों की दोस्ती जरूरी है, क्योंकि किताबें इंसान को सोचने की ताकत देती हैं, तर्क और ज्ञान के साथ बोलने की भाषा सिखाती हैं।

आज के दौर में किताबों से दूरी और मोबाइल, सोशल मीडिया पर ज़रूरत से ज़्यादा समय बिताने की वजह से हमारी नस्लों में सोचने, समझने की सलाहियत, जिम्मेदारी और खुद पर एत्माद में कमी देखी जा रही है। नई नस्ल किताबों से दूर होती जा रही है और यह एक बड़ा नुकसान है।

जो लोग किताबों से दूर हो जाते हैं, वो लोगों की बातों और अफवाहों पर जल्दी यकीन कर लेते हैं और गुमराह हो जाते हैं। जबकि किताबें इंसान की सही रहनुमाई करती हैं और उसे जिंदगी के सही मायनों से वाकिफ कराती हैं।

हमें याद रखना चाहिए कि हमारे बुजुर्ग, उलमा और मशहूर शख्सियतें हमेशा किताबों से दोस्ती रखने वाले थे। उन्होंने किताबों को अपना रहनुमा और हमसफर बनाया।

आज के इस तेज रफ्तार और सोशल मीडिया के दौर में, जहाँ मोबाइल और इंटरनेट ने नौजवानों को अपना कैदी बना लिया है, वहीं किताबों से दूरी का रिवाज होता जा रहा है। जबकि इंसान की असली तरक्की इल्म, तालीम, समझ, सच्चाई और अच्छी सोच में ही है।

इसलिए ज़रूरी है कि हम किताब को अपनी जिंदगी का हिस्सा बनाएं। रोजाना थोड़ा समय किताबों को दें। खासकर कुरआन, हदीस, इस्लामी इतिहास और नेक लोगों की किताबें पढ़ें, जिससे हमें सही राह मिले और अल्लाह हमारे सीने को इल्म और हिकमत से रौशन कर दे।

सोशल मीडिया का समाज पर नकारात्मक प्रभाव

नौशाद खान (विद्यार्थी)

हमारा समाज विश्वव्यापी महामारी से जूझ रहा है, हर व्यक्ति बच्चा, जवान बूढ़ा मर्द औरत छोटे बड़े की जिंदगी कहीं ना कहीं उससे प्रभावित है। उसके कारण ज़िंदगी में जो परिणाम सामने आ रहे हैं वह चिंताजनक है। और वह है सोशल मीडिया की लत और आदत। आइए हम विस्तार से समझते हैं कि सोशल मीडिया की महामारी से तुलना क्यों की गई।

सोशल मीडिया क्या है?

सोशल मीडिया वह प्लैटफॉर्म या ऑनलाइन माध्यम है जहां लोग सूचना विचार और अपना अनुभव फोटो वीडियो और संदेशों का आदान–प्रदान करते हैं इसमें न केवल जानकारी बल्कि अपनी राय रचनाएं और प्रतिक्रियाएं भी साझा कर सकते हैं।

कुछ प्रसिद्ध प्लेटफार्मः–

फेसबुक, ट्यूटर, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, टिकटोक आदि। इनका सकारात्मक उद्देश्य लोगों को जोड़ना, सूचना समाचार फैलाना, मनोरंजन और शिक्षा प्रदान करना, सामाजिक और व्यावसायिक नेटवर्क बनाना और सामाजिक समर्थन, समुदाय बनाने में मदद करना है। वहीं इसके नमारात्मक प्रभाव को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता।

नकारात्मक प्रभावः–

इसके नकारात्मक प्रभाव जिसमें मूलभूत वास्तविक जीवन और रिश्तों से दूरी का बढ़ना, स्वास्थ्य पर असर, नौजवानों में मानसिक तनाव, ध्यान भंग होना, पढ़ाई में या काम में बाधा आना, नींद की कमी, व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग, समय की बर्बादी, हिंसा और अश्लीलता तक आसानी से पहुंच, साइबर बुलिंग, धमकियां, युवाओं में आत्मसम्मान और आत्म छवि पर नकारात्मक प्रभाव, और फेक न्यूज और अफवाहों का प्रसार जिससे समाज की सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है इसी प्रकार अनेकों नकारात्मक परिणाम है जिनका एहसास हमारे समाज के लिए अभी अकल्पनीय है।

कुछ रिपोर्ट्सः–

संयुक्त राष्ट्र *(UN)/ OHCHR* म्यांमार (रोहिंग्या) तथ्य जांच रिपोर्ट (2018) के अनुसार फेसबुक पर नफरत फैलाने वाले अभियानों और झूठी सूचनाओं ने रोहिंग्या समुदाय के खिलाफ हिंसा और उनके विस्थापन में एक निर्णायक भूमिका निभाई, भारत में भी कोरोना काल में तबलीगी जमात को वायरस जिहादी नामित कर सोशल मीडिया द्वारा झूठ परोसा गया।

(LSE) लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्सः की रिपोर्ट में पाया गया कि व्हाट्सएप पर पहले अफवाहों ने भीड़ द्वारा हिंसा दंगे और हत्या जैसी घटनाओं को जन्म दिया इसी तरह सैकड़ों उदाहरण हैं जो बताते हैं कि सोशल मीडिया पर गलत या भ्रामक सूचनाओं को फैलाना कुछ विशेष परिस्थितियों में नरसंहार या बड़े पैमाने की हिंसा का खतरा बढ़ा देती हैं।

इसी प्रकार हमारी निजता का भी दुरुपयोग होता है जिसमें सबसे ज़्यादा भयावह डाटा चोरी है कंपनियां हमारे मोबाइल एप्स और वेबसाइट से निजी जानकारी जैसे लोकेशन, कॉन्टेक्ट्स, सर्च हिस्ट्री बिना इजाजत के इकट्ठा करती हैं 2023 में कई मामले

इस तरह के सामने आए हैं। और हैकिंग स्कैम के हर साल भारत में हजारों मामलात पेश आते हैं।

सोशल डिलेमा (2020):–

2020 में नेटफ्लिक्स ओटीटी प्लेटफॉर्म पर एक डॉक्यूमेंट्री प्रसारित की गई जिसमें सोशल मीडिया की गहराई को आसान भाषा में समझाया गया है।

The Social Dilemma (2020) डॉक्यूमेंट्री बताती है कि यह सिर्फ एक प्लेटफॉर्म नहीं बल्कि एक ऐसा सिस्टम है जो हमारी सोच और व्यवहार को नियंत्रित करता है। इसमें दिखाया गया है कि जब कोई ऐप मुफ्त होता है, तो असल में यूजर ही उसका प्रोडक्ट बन जाता है। कंपनियाँ हमारे डेटा और आदतों को बेचकर मुनाफा कमाती हैं। सोशल मीडिया के एल्गोरिदम हमें वही दिखाते हैं जो हमारा ध्यान खींचे, जिससे हम एक ''फिल्टर बबल'' में फँस जाते हैं जहाँ सिर्फ हमारी पसंद की बातें दिखती हैं और सच्चाई धीरे–धीरे पीछे छूट जाती है। यही कारण है कि फेक न्यूज सच्ची खबरों से छह गुना तेज फैलती है, और लोग अनजाने में झूठ को ही सच मान लेते हैं। इस डॉक्यूमेंट्री में यह भी बताया गया है कि सोशल मीडिया के प्रभाव से किशोरों में चिंता, अवसाद और आत्मसम्मान की कमी जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। अंत में संदेश यही दिया गया है कि हमें तकनीक पर नियंत्रण रखना होगा, न कि तकनीक को हम पर।

हम क्या करें?

सोशल मीडिया एक जाल है जिससे निकलना और समझना दोनों ही नाजुक काम है यह हमें जोड़ भी रहा है और धीरे–धीरे हमारी सोच और निजता को बंद भी कर रहा है हाल के सर्वे के अनुसार एक आम व्यक्ति रोज औसत 2.5 घंटे सोशल मीडिया पर बिताता है जिससे मानसिक तनाव नींद की कमी जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। अब हमें संतुलित उपयोग, जानकारी की जांच, और स्क्रीन टाइम की सीमा तय करनी होगी ताकि हम इस डिजिटल जाल में फंसे बिना इसका सही लाभ ले पाएं। ❖❖❖

दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरख़्वास्त

प्रिय पाठको! सच्चा राही दिसम्बर 2025 का अंक प्रेस जा रहा था कि अचानक ख़बर मिली कि हमारे दोस्त मौलाना सिद्दीक़ अहमद कासमी, निवासी मौज़ा भुलकी सुलतानपुर के वालिदे मोहतरम जनाब इक़बाल अहमद साहब का लखनऊ के एक अस्पताल में 23 नवम्बर, 2025 को इन्तिक़ाल हो गया, ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन''।

मरहूम बहुत ही अख़्लाक़मंद, सादा मिज़ाज, नमाज़ रोजे के पाबंद इन्सान थे, इस दुख की घड़ी में हम सब बराबर के शरीक़ हैं और दुआ करते हैं कि अल्लाह उनकी मग़फिरत फरमाए, और सभी परिवारजनों को सब्रे जमील अता फरमाए। हम आप सबसे भी दुआ–ए–मग़फिरत की दरख़्वास्त करते हैं।

ये स्नैक्स आपके शरीर को रखेंगे गर्म

डॉ0 विभू पांडेय, आयुर्वेदाचार्य

सर्दियों में गर्मियों के मुकाबले हमें ज्यादा भूख लगती है। ऐसे में गरमागरम चीज़ें खाने की बहुत चाहत होती है। अपनी भूख को शांत करने के लिए हम अनहेल्दी चीजें पहले चुनते हैं। कई बार बस चाहत होते ही जंक और पैकेट फूड खा लेते हैं। लेकिन ये चीजें कई बीमारियों की वजह बन सकती हैं। इसलिए सर्दियों में हमें अपने स्नैक्स पहले से प्लान रखने चाहिए। आप कहीं भी जाएं अपने साथ स्नैक्स लेकर ज़रूर जाएं। आज हम कुछ ऐसे स्नैक्स के बारे में बात करेंगे, जो सर्दियों में हमारे शरीर को गर्म रखने में मदद कर सकते हैं। इनके सेवन से शरीर को न्यूट्रिशन भी मिलेगा और बीमारियों का खतरा भी नहीं होगा।

शकरकंद की चाटः—

आप कुछ नमकीन खाना चाहते हैं, तो आप शकरकंद की चाट खा सकते हैं। शकरकंद शरीर को गर्म रखता है। इसके सेवन से शरीर को कई पोषक तत्व मिलते हैं। इसे बनाने के लिए आप शकरकंद को उबाल कर इसमें नींबू, धनिया, टमाटर और प्याज डालकर चाट तैयार कर सकते हैं।

स्वीट कॉर्न चाटः—

शाम की भूख को शांत करने के लिए आप स्वीट कॉर्न चाट खा सकते हैं। ये चाट शरीर को गर्म रखने में मदद करेगी। इससे आपकी भूख भी शांत होगी और न्यूट्रिशन भी मिलेगा। स्वीट कॉर्न को उबाल कर इसमें नींबू और मसाले मिला कर आप चाट बना सकते हैं।

तिल के लड्डूः—

सर्दियों में शरीर को गर्म रखने के लिए घर में बने लड्डू से बेहतर क्या ही होगा। अपने मीठे की चाहत कंट्रोल करने के लिए आप तिल के लड्डू खा सकते हैं। तिल की तासीर गर्म होती है। इनके सेवन से शरीर में गर्माहट रहती है। इसे आप भून कर और गुड़ मिलाकर खा सकते हैं।

गोंद के लड्डूः—

शरीर को गर्म रखने के लिए आप गोंद के लड्डू खा सकते हैं। गोंद की तासीर गर्म होती है इसलिए इसे सर्दियों में ही खाया जाता है। अगर आप एक लड्डू भी खा लेते है तो इससे आपकी मीठे की चाहत कंट्रोल रहेगी और आपको बार—बार भूख नहीं लगेगी।

आयुर्वेद में ठंड से बचाव के लिए तिल और गोंद जैसे पदार्थों के सेवन का जिक्र किया गया है। ऐसे में अगर आप इनका सेवन किसी न किसी रूप में करते हैं तो यह आपकी सेहत के लिए फायदेमंद होगा।

गुड़ और तिलः—

गुड़ पाचन में सुधार करता है और रक्त को शुद्ध करता है, जबकि तिल में कैल्शियम और आयरन होते हैं जो हड्डियों को मजबूत करते हैं। गुड़—तिल की मिठाई सर्दियों में लाभकारी होती है।

अदरक और लहसुनः—

अदरक शरीर में गर्माहट पैदा करता है और सर्दी—खांसी से बचाता है, लहसुन में एंटीबायोटिक गुण होते हैं जो रोग—प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। इन्हें चाय, सूप या भोजन में शामिल किया जा सकता है।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

कजाकिस्तान की मस्जिद में बिछाई गई 12,464 वर्ग मीटर की कालीन

भदोही को विश्व की सबसे बड़ी कालीन बनाने का खिताबः—

कालीन नगरी भदोही को विश्व की सबसे बड़ी हैंड ड्राफ्टेड कालीन बनाने का खिताब मिला है। पटोदिया कम्पनी द्वारा बनाई गई 12,464 वर्ग मीटर की कालीन को गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड में जगह मिली है। यह कालीन क़ज़ाकिस्तान की अस्ताना ग्रैंड मस्जिद में बिछी है। मंगलवार को ऑनलाइन सेरेमनी में गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड की ओर से कम्पनी को प्रमाण पत्र सौंपा गया। कालीन को एक हज़ार कारीगरों ने छह महीने में तैयार किया और इसे 125 टुकड़ों में क़ज़ाकिस्तान की मस्जिद में पहुंचाया गया। वहां कारीगरों ने दो महीने की मेहनत के बाद इसे मस्जिद में बिछाया।

कालीन की कीमतः—

15 लाख अमेरिकी डालर यानी भारतीय रुपयों में 13 करोड़ 20 लाख रुपये है। भदोही से पहले विश्व की सबसे बड़ी हैंड ड्राफ्टेड (हाथ से बुनी) कालीन बनाने का रिकॉर्ड ईरान के नाम था। ईरान की कम्पनी ने 5630 वर्ग मीटर की कालीन दुनिया की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक संयुक्त अरब अमीरात की शेख जायद ग्रैंड मस्जिद के लिए बनाया था।

क्या है कालीन की खासियतः—

मस्जिद में बिछी कालीन सिर्फ साइज के हिसाब से ही नहीं, बल्कि कई मायनों में खास है। इस विशाल कालीन में पूरी तरह ऊन का इस्तेमाल हुआ है। इसमें 70 मीटर व्यास वाला आकर्षक मध्य चक्र (मेडलियन) है। ईरान के परसियन डिजाइन वाली इस कालीन का प्रेरणा स्रोत मस्जिद के बगीचे और जन्नत—उल—फिरदौस से लिया गया है। मस्जिद के मुख्य भाग में इसे बिछाया गया है।

ऐसी है मस्जिदः—

खूबसूरत अस्ताना मस्जिद इस्लामी कला और कजाख संस्कृति का प्रतीक है। मस्जिद के मुख्य गुंबद की ऊंचाई 83.2 मीटर और व्यास 62 मीटर है। इस मस्जिद की चार मीनारें इस्लाम के पांच स्तंभों का प्रतीक हैं। इसमें दुनिया का सबसे ऊँचा लकड़ी का दरवाज़ा भी लगा है।

दुनिया के पैरा खिलाड़ियों की आवाज़ बनेंगे अबू हुबैदाः—

शहर के पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी अबू हुबैदा अब देश ही नहीं विश्व भर के पैरा खिलाड़ियों की आवाज़ बनेंगे और बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन व खिलाड़ियों के बीच पुल का काम करेंगे। विश्व के पैरा खिलाड़ियों की पंसद के आधार पर वर्ल्ड बैडमिंटन फेडरेशन *(BWF)* प्लेयर्स कमिशन के लिए पूरे विश्व से छह खिलाड़ी निर्वाचित हुए है। इनमें अबू भी है।

ये भी निर्वाचितः—

प्लेयर्स कमिशन में अबू के साथ *USA* की एमी बर्नेट, चीन के डेनियल चौन हो यूएन, फ्रांस के गिलाउम गैली, मिस्र के तारेक अब्बास गरीब जेहरी और डेनिश खिलाड़ी कैथरीन रोसेनग्रेन को भी निर्वाचित किया गया है।

अबू की उपलब्धियांः—

अबू भारत में नंबर—1, एशिया में नंबर 3 और विश्व में नंबर 3 (डब्ल्यूएच 2 कैटेगरी) पर है।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांकः 22/11/2025 तारीख ____________

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़—ए—जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाज़िरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT	ATIYA	BUILDING
NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं 08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961 के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 24 - Issue 10

Whatsapp & Call 9559844716
Office Timing : 08:00 AM To 1:00PM
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3